सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

▪ वर्ष : 15 ▪ ▪ अंक : 8 ▪ ▪ 5 नवम्बर 2018 ▪ ▪ मूल्य : 20 रु. ▪

सूरिमंत्र महामांगलिक महोत्सव

मुमुक्षु शुभम लुंकड दीक्षा 18-2-2019

॥ श्री अवंतिपार्श्वनाथाय नमः ॥

श्री अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ उज्जैन

उज्जैन नगरे जाजम मुहूर्त प्रसंगे

भावभरा आमंत्रण

पावन-निश्रा

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

जाजम मुहूर्त

मिगसर वदि 10 रविवार, 2 दिसंबर 2018

सकल श्री संघ, सादर जय-जिनेन्द्र

श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ का जीर्णोद्धार का कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर है। प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. की निश्रा में 18 फरवरी 2019 को संपन्न होगी।

प्रतिष्ठा संबंधी जाजम 2 दिसंबर 2018, रविवार को प्रातः 8बजे से उज्जैन में संपन्न होगी। जिसमें फले चुन्दड़ी, नौकारसियों, पूजाओं, राजदरबार, जय जिनेन्द्र आदि के चढ़ावे बोले जाएंगे। सकल श्रीसंघ से निवेदन है कि आप सभी अवश्य पधारे। महान तीर्थ की प्रतिष्ठा में लाभ लेकर पुण्योपार्जन करें।

निवेदक

श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ जैन श्वे. मूर्तिपूजक मारवाड़ी समाज ट्रस्ट, उज्जैन

हीराचन्द छाजेड़	निर्मल कुमार सकलेचा	चन्द्रशेखर डागा	ललित कुमार बाफना
अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	सचिव	कोषाध्यक्ष
94068 50603	9407130220	9425091340	9425379310

रमेशचन्द बोठिया विजयचन्द कोठारी महेन्द्र कुमार गादिया नरेन्द्र कुमार भाकड़ रजत कुमार मेहता

विनीत

श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ प्रतिष्ठा महोत्सव समिति, उज्जैन

पारसचन्द जैन	पुखराज चौपड़ा	संघवी कुशलराज गुलेच्छा, बैंगलोर
अध्यक्ष, मंत्री म.प्र. शासन	उपाध्यक्ष	संयोजक
09425091497	09425195874	09844066064

आयोजन स्थल

श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ, दानीगेट, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 2555553, 2585854

+919111882888 +919009091199, +918884440928

www.avantitirth.com avantitirth@gmail.com

Follow us on: avantitirth

कृपया आपके आगमन की पूर्व सूचना आवास आदि की व्यवस्था हेतु अवश्य दिरावे।

अशोक कोठारी - 9827444011 दिलीप चोपड़ा - 9425091387

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

आहच्च सवणं लद्धुं सदा परम दुल्लहा।
सोच्चा णेयाउणं मग्गं बहवे परिभस्सई॥

कदाचित धर्मश्रवण का अवसर पा लेने पर भी उस में श्रद्धा होना परम दुर्लभ है। धर्म की ओर ले जाने वाले सही मार्ग को जानकर भी बहुत लोग इस मार्ग से भ्रष्ट हो जाते है।

Even after getting an opportunity to hear religious discourses, it is very difficult to have faith in religion. there are many who get lost even after being shown the right path.

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 15 अंक : 8 5 नवम्बर 2018 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	05
3. गौत्र इतिहास	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	06
4. खरतरगच्छः प्रादुर्भाव और परिस्थितियाँ	महोपाध्याय विनयसागर	07
5.अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ : इतिहास के झरोखे से...	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	11
6. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	15
7. आत्मीय अर्पणा	महत्तरा दिव्यप्रभाश्रीजी म.	16
8. सूरिमंत्र साधना वर्धापना गीतिका	मुमुक्षु नीलिमा भंसाली	16
9. अश्रुओं का निर्मल जल	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	17
10. अभिनंदन गीतिका	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	26
11. अधूरा सपना	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	27
12. शासन रत्न : श्री गौतम जी कवाड़	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	28
13. एक छोटी सी कहानी	कैलाश बी. संखलेचा	30
14. समाचार दर्शन	संकलन	31
15. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	38

अपनों से निवेदन

खरतरगच्छ सहस्राब्दी गौरव वर्ष गतिमान है। इससे संबंधित / संदर्भित आलेख, कविता आदि प्रकाशन योग्य सामग्री एवं जिनशासन संबंधित समाचार कृपया प्रकाशन हेतु अवश्य प्रेषित करें।

निवेदन है कि मेल आदि से निबंध, समाचार आदि हर महिने की 28 तारिख तक कार्यालय को प्राप्त हो जाय, इस तरह अवश्य भिजवायें।

Jahajmandir99@gmail.com

विज्ञापन हेतु हमारे प्रचार मंत्री कैलाश बी. संखलेचा, चैन्नई से संपर्क करावें। मो. 094447 11097

नवप्रभात

अंग्रेजी भाषा का एक वाक्य पढ़ा था–

Loneliness is the biggest punishment in this world.
And solitude is the biggest gift/blessing.

अकेलापन जीवन का अभिशाप है।

एकान्त जीवन का वरदान है।

मन इन दो शब्दों पर अटक गया। एकान्त के बिना अकेलापन कैसे होगा?और जब एकान्त वरदान है तो अकेलापन अभिशाप कैसे हो गया?

मन विचारों में उलझ कर सुलझने का यत्न करने लगा।

प्रश्न है कि व्यक्ति अकेलेपन का अनुभव क्यों करता है?

अकेलेपन के अनुभव में तितिक्षाऐं कारण है। जब कोई किसी से कुछ चाहता है, थोडा जुनून के साथ चाहता है और उसे नहीं मिलता... तो उसे लगता है, जैसे मेरा कोई नहीं है।

और यह तय है कि कभी भी कामनाओं का संसार पूरा नहीं होता। इसलिये वह छटपटाता है।

यही विचार उसे अकेलापन देते हैं। अकेलेपन का अनुभव उस छटपटाहट का परिणाम है।

यदि इन विचारों को थोडा और यथार्थता के साथ गहरा कर लिया जाय तो यही विचार उसके लिये सत्य–बोध का द्वार खोल देते हैं।

यहाँ मैं अकेला ही तो हूँ! कौन है मेरा! व्यवहार से सब मेरे हैं।

जन्मा तब भी अकेला था! मृत्यु के समय भी अकेला ही रहूँगा। बीच के समय का झूठा मेला है। इस मेले को मैं यथार्थ मान लेता हूँ। तो बार–बार अकेलेपन की समस्या में उलझ जाता हूँ।

एकान्त पूर्ण बनने का उपाय है। दूसरों के बीच मैं आधा अधूरा होता हूँ। बंट जाता हूँ या बांट लिया जाता हूँ। जबकि एकान्त में मैं केवल और केवल अपने साथ होता हूँ... और पूर्णता के साथ होता हूँ।

वहाँ मुझे कोई विभाजित नहीं करता। यही एकान्त की परिणति है।

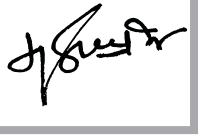

सोलह सतियाँ
कथानक
7

विलक्षण वैराग्यवती सती सुन्दरी

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

(गतांक से आगे...)

ओह! ये मुनि सेवा का अनुपम लाभ देकर मुझे भव-सिंधु से तार-उबार रहे हैं। जैसे कृतज्ञता और अनुमोदना से उनका रोम-रोम खिल उठता। इधर पीठ-महापीठ मुनि ने अपनी समस्त क्षमताओं को ज्ञान-आराधना में नियोजित किया।

उनकी ज्ञान-किरणें शुक्ल पक्ष की शुभ्र चाँदनी की भाँति अवनि-तल को पावन करने लगी। उनमें ज्ञान साधना की पवित्र ऊँचाइयाँ तो थी पर वे उपबृंहणा नहीं कर पाते थे।

इतना ही नहीं, बाहु-सुबाहु मुनि की प्रशंसा कानों में तीर की भाँति चुभती थी। यदा-कदा वे गणनायक पर पक्षपात का आरोप भी लगा देते।

जब देखो तब गुरु महाराज इन दोनों मुनियों की प्रशंसा करते रहते हैं। क्या हम विनय और वेयावच्च में कम हैं?

मन की दुर्भावना ! विचारों की क्लिष्टता ! अध्यवसायों की मलिनता !

वे दोनों यद्यपि ज्ञान-साधना और चारित्र की साधना से समृद्ध थे पर वेयावच्च प्रेमी मुनियों के प्रति ईर्ष्या, उन्हें देखकर कुढना-चिढना एक तरह से स्वर्ण पात्र में पीतल की मेख के समान था। ज्ञान-साधना से विपुल कर्म निर्जरा की पर ईर्ष्या एवं आचार्य प्रत्यनीकता के कारण स्त्री वेद का बंध किया।

छहों मित्र आयुष्य कर्म पूर्णता के पश्चात् स्वर्गगामी हुए, तदुपरान्त-

(I) गण की व्यवस्थित सारणा-वारणा करके वज्रनाभ ने तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन किया था, परिणामतः वे प्रथम तीर्थपति आदिनाथ बने।

(II) बाहु-सुबाहु वैयावृत्य गुण के कारण पुण्यबंध कर महान् बल के स्वामी भरत व बाहुबली बने।

(III) पीठ-महापीठ ने ईर्ष्या के कारण स्त्री-भव पाया और ब्राह्मी-सुन्दरी बने।

(IV) केशव कुमार धर्माराधना के प्रभाव से श्रेयांसकुमार बना।

(V) सामग्री प्रदान करने वाला वणिक् उसी भव में दीक्षा लेकर सर्वोच्च सिद्ध पद को उपलब्ध हुआ।

चतुर्थ वांचना शिविर का आमंत्रण

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद एवं अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित वांचना शिविर में समस्त ज्ञान रसिक, स्वाध्याय रसिक, धर्म रसिक बंधु भगिनी सादर आमंत्रित है।

तीन वांचना शिविर की सफलता के बाद पुनः आपकी ज्ञान अभिवृद्धि हेतु प्रस्तुत है यह चतुर्थ वांचना शिविर दि. 26 दिसम्बर से 30 दिसम्बर 2018 तक वृहत भूभाग में निर्मित जिन शासन की अलौकिक कृति कुशल वाटिका (बाड़मेर) के मनमोहक वातावरण में आयोजित किया गया है।

पू. खरतरगच्छाधिपति गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा के आज्ञा एवं आशीर्वाद से उनके शिष्य स्वाध्याय रसिक पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी. म., पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी. म., पू. मुनि श्री विरक्ततप्रभसागरजी. म., मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी. म. की निश्रा में यह शिविर आयोजित होगा।

आप सभी को अवश्य पधारना है। साथ ही अपने 12 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों को भी आने हेतु प्रेरित करना है। कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें जिससे आपके आवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

संपर्क सूत्र– रमेश लुंकड़ 94232 86112, ललित डाकलिया 99508 82563, रमेश मालू 98442 51261

अनुशासन एवं सभी कार्यक्रमों में उपस्थिति अनिवार्य रहेगी।

गोत्र इतिहास

खींवसरा/खमेसरा/खीमसरा गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

मरुधर देश के चौहान राजपूतों से इस गोत्र का उद्भव हुआ है। राजपूत खीमजी ने गांव का नाम अपने नाम से से खींवसर करके अपना राज्य चला रहे थे। भाटी राजपूतों के साथ इनकी परम्परागत शत्रुता थी। मौका देख कर एक बार भाटी राजपूतों ने इनके गाय, बैल आदि धन प्रचुर मात्रा में चुराकर पलायन कर गये।

खीमजी अन्य राजपूतों को साथ लेकर पीछे दौडे। रास्ते में भिडंत हुई। भाटी राजपूत भी बडी संख्या में थे। इस कारण खीमजी का दल कमजोर पड़ गया।

खीमजी चिंता में पड़ गये। सोचा कि और सैन्य बल एकत्र कर इन्हें युद्ध में परास्त कर लूटा हुआ अपना धन पुनः प्राप्त करेंगे। रास्ते में अपनी शिष्य-संपदा के साथ विहार करते हुए आचार्य भगवंत श्री जिनेश्वरसूरि मिले। उनका तेज देख कर वंदन नमस्कार किया। अपनी चिंता से अवगत किया। सारी घटना सुनाकर कहा- गुरुदेव! कृपा करो।

गुरुदेव ने कहा- तुम हमेशा के लिये शिकार, मद्य, मांस और रात्रि भोजन का त्याग करो।

खीमजी आदि सभी ने इन चारों नियमों को स्वीकार किया।

गुरुदेव ने अभिमंत्रित वासचूर्ण दिया। वे सज्ज होकर भाटी राजपूतों के पीछे गये। गुरुदेव की साधना के दिव्य प्रभाव से खीमजी आदि उस समय चमत्कृत होकर अचंभित हो गये जब देखा कि भाटी राजपूत सामने से चले आ रहे हैं। उन्होंने नम्रता के साथ चुराया सारा धन अर्पण करके क्षमायाचना की।

यह चमत्कार गुरुदेव की मंत्र सिद्धि का था जो उनका मन परिवर्तित हो गया था। खीमजी और साथी राजपूतों ने गुरुदेव की शरण स्वीकार करते हुए जिन-धर्म को अपना लिया।

इतिहास कहता है कि चार पीढ़ियों तक उनके पुत्र-पुत्री आदि के सांसारिक संबंध राजपूतों में ही होते रहे। तब अन्य राजपूत इनका उपहास करते। क्योंकि इन्होंने हिंसा का त्याग कर दिया था। खानपान शुद्धता से परिपूर्ण था।

आचार्य जिनेश्वरसूरि की परम्परा के पांचवें आचार्य प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि विहार करते हुए एक बार खींवसर पधारे।

खीमजी की पांचवीं पीढी के भीमजी चौहान गुरुदेव के दर्शनार्थ गये। अपनी पीड़ा व्यक्त की। तब दादा गुरुदेव ने इन्हें ओसवाल जाति में शामिल किया। खींवसर के होने के कारण खींवसरा कहलाये। यही गोत्र कहीं-कहीं खमेसरा, खीमसरा भी कहा जाता है। पर गोत्र एक ही है।

आचार्य जिनवल्लभसूरि ने वि.सं. 1163 में चित्रकूटीय वीर चैत्य प्रशस्ति अपरनाम अष्ट-सप्ततिका की रचना की थी। उसमें खींवसर निवासी क्षेमसरीय मिषग्वर, सर्वदेव और उनके तीन पुत्र रसल, धंधक एवं वीरक आदि श्रेष्ठियों के नाम उल्लिखित हैं। जो आचार्यश्री के परम भक्त अनुयायी थे। विधिपथ अर्थात् खरतरगच्छ के अनुयायी होने का उसमें स्पष्ट रूप से उल्लेख है। खरतरगच्छीय आचार्य श्री जिनकीर्त्तिसूरि खींवसरा गोत्र के थे जिनका जन्म वि. 1753 में फलोदी में हुआ था।

खरतर
सहस्राब्दी
गौरव वर्ष

खरतरगच्छ : प्रादुर्भाव और परिस्थितियाँ

—महोपाध्याय विनयसागर

उस समय श्वेताम्बर समुदाय के यति लोग जिन–मंदिरों में रहा करते थे, जिनको प्रायः चैत्यगृह कहते थे। जैन–शास्त्रों के विधान के अनुसार जैन यतियों का मुख्य कर्तव्य केवल आत्म–कल्याण करना है और उसके आराधन निमित्त शम, दम, तप आदि दशविध यति–धर्म का सतत पालन करना है। जीवन–यापन के निमित्त जहाँ कहीं मिल गया वैसा लूखा–सूखा और वह भी शास्त्रोक्त विधि के अनुकूल भिक्षान्न का उपभोग कर, अहर्निश ज्ञान–ध्यान में निमग्न रहना और जो कोई मुमुक्षु–जन अपने पास चला आवे उसे एकमात्र मोक्षमार्ग का उपदेश करना है। इसके सिवाय यति को न गृहस्थ जनों का किसी प्रकार का संसर्ग ही कर्तव्य है और न किसी प्रकार का किसी को उपदेश ही वक्तव्य है। किसी स्थान में बहुत समय तक नियतवासी न बनकर सदैव परिभ्रमण करते रहना और वसति में न रहकर गांव के बाहर जीर्ण–शीर्ण देवकुलों के प्रांगणों में एकान्त निवासी होकर किसी न किसी तरह का सदैव तप करते रहना ही जैन यति का शास्त्र विहित एकमात्र जीवन–क्रम है।

चैत्यवासी लोग इन नियमों की सर्वथा अवहेलना करते थे। इन लोगों के आचार की कड़ी आलोचना संभवतः सर्वप्रथम हमें आचार्य हरिभद्रसूरि कृत संबोध प्रकरण में मिलती है। उक्त आचार्य चैत्यवासियों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'ये कुसाधु चैत्यों और मठों में रहते हैं। पूजा करने का आरम्भ करते हैं। देव–द्रव्य का उपभोग करते हैं। जिन–मन्दिर और शालायें बनवाते हैं। रंग–बिरंगे सुगन्धित धूपवासित वस्त्र पहिनते हैं। बिना नाथ के बैलों के सदृश स्त्रियों के आगे गाते हैं। आर्यिकाओं द्वारा लाये गये पदार्थ खाते हैं और तरह–तरह के उपकरण रखते हैं। सचित् जल, फूल आदि द्रव्य का उपभोग करते हैं। दिन में दो–तीन बार भोजन करते और ताम्बूल, लवंगादि भी खाते है। ये लोग मुहूर्त निकालते हैं, निमित्त बतलाते हैं तथा भभूत देते हैं, त्योहारों में मिष्ट आहार प्राप्त करते हैं। आहार के लिये खुशामद करते हैं और पूछने पर भी सत्य धर्म नहीं बतलाते। स्वयं भ्रष्ट होते हुए भी आलोचना–प्रायश्चित्त आदि करवाते हैं। स्नान करते, तेल लगाते, शृंगार करते और इत्र–फुलेल का उपयोग करते हैं। अपने हीनाचारी मृत–गुरुओं की दाहभूमि पर स्तूप बनवाते हैं। स्त्रियों के समक्ष व्याख्यान देते हैं और स्त्रियाँ उनके गुणों के गीत गाती हैं। सारी रात सोते, क्रय–विक्रय करते और प्रवचन के बहाने व्यर्थ बकवास में समय नष्ट करते हैं। चेला बनाने के लिये छोटे–छोटे बच्चों को खरीदते, भोले लोगों को ठगते और जिन–प्रतिमाओं का क्रय–विक्रय करते हैं। उच्चाटन करते और वैद्यक, मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र, गंडा–ताबीज आदि में कुशल होते हैं। ये सुविहित साधुओं के पास जाते हुए श्रावकों को रोकते हैं। शाप देने का भय दिखाते हैं। परस्पर विरोध रखते हैं और चेलों के लिये आपस में लड पड़ते हैं। चैत्यवास की इस दुर्दशा को देखकर कई चैत्यवासी यतिजनों के मन में भी क्षोभ उत्पन्न होता था, परन्तु उसका प्रतिकार करने का साहस विरले ही कर सकते थे। ऐसे साहसी और सच्चे यतियों में श्री वर्धमानाचार्य का नाम लिया जा सकता है; जिन्होंने 54 चैत्य स्थानों के अधिकार और वैभव को छोड़कर सच्चे साधु–जीवन को बिताने का संकल्प किया। वर्धमानाचार्य ने यद्यपि स्वयं चैत्यवास त्याग करके त्यागमय जीवन ग्रहण किया था, परन्तु फिर भी उनके द्वारा चैत्यवास के प्रति किसी व्यापक आन्दोलन का जन्म न हो सका। इस आन्दोलन का सूत्रपात उनके योग्य शिष्य श्री जिनेश्वरसूरि के हाथों से हुआ।

जिनेश्वरसूरि और खरतर विरुद प्राप्ति

जिनेश्वरसूरि और बुद्धिसागरसूरि ने गुरु की आज्ञा को सिर पर धारण कर गुर्जर प्रदेश की ओर विहार करना प्रारम्भ कर दिया और धीरे–धीरे वे अणहिलपत्तन (पाटण)

में पहुंच गये। पत्तन में इनको बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। चैत्यवासियों का प्रमुख गढ़ होने के कारण, इन लोगों को वहाँ कहीं रहने का भी स्थान न मिला। वे घर–घर घूमते फिरे। अन्त में वे वहाँ के राजा दुर्लभराज के पुरोहित सोमेश्वर के मकान पर पहुंचे। वहाँ उन्होंने अपनी प्रतिभा एवं विद्वत्ता के संकेत–स्वरूप वेद मन्त्रों का उच्चारण किया और उन्होंने वेद के ब्राह्म, पैल्य तथा दैवत रहस्यों का बड़ी योग्यतापूर्वक उद्घाटन किया। उस वेदध्वनि को सुनकर पुरोहित सोमेश्वर स्तम्भित हो गया। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि उसकी समग्र इन्द्रियों की चेतनता उसकी श्रुतियों में ही आ गई है। उसने अपने भाई द्वारा इन दोनों भाइयों को बुलवाया। उनके आने पर सोमेश्वर अपना आसन छोड़कर खड़ा हो गया और उनको आसन प्रदान किया परन्तु वे अपने शुद्ध कम्बलों पर बैठ गये। पुरोहित को आशीर्वाद देते समय दोनों आचार्यों ने जो शब्द कहे, उनमें न केवल उनका अगाध पाण्डित्य प्रकट हो रहा था, अपितु धार्मिक सहिष्णुता और उदारता भी प्रकट हो रही थी।

आशीर्वचन सुनकर पुरोहित बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उनके प्रति बड़ी सहानुभूति दिखाते हुए पूछा कि 'आप कहाँ पर ठहरे हुए हैं?' इसके उत्तर में उन्होंने अपनी सारी कठिनाई पुरोहित के सामने रखी। उन्होंने बतलाया कि यहाँ चैत्यवासियों का अत्यधिक प्रभाव होने के कारण हमको कोई ठहरने का स्थान नहीं देता। राजपुरोहित ने विद्वानों और महात्माओं का आदर करना अपना कर्तव्य समझकर अपनी 'चन्द्रशाला' में इनको रहने के निमित्त स्थान दे दिया।

आचार्य–द्वय भी अपने साधुओं सहित वहाँ रहने लगे और बयालिस दोषों से मुक्त निःस्पृह भाव से भिक्षा ग्रहण करने लगे। गणधरसार्द्ध शतक वृत्ति तथा युगप्रधानाचार्य गुर्वावली में इस प्रसंग को कुछ विस्तार के साथ दिया गया है। उन ग्रन्थों के अनुसार वर्धमानसूरि अपने अठारह शिष्यों सहित पाटण गये थे और वहाँ कोई स्थान न मिलने पर कहीं किसी खुली पड़शाल में डेरा डाला।

तब जिनेश्वर पंडित ने कहा कि 'गुरु महाराज! इस तरह बैठे रहने से क्या होगा?'

गुरुजी ने कहा– 'तो फिर क्या किया जाए?'

जिनेश्वर बोले– 'यदि आपकी आज्ञा हो तो वह सामने जो बड़ा मकान दिखाई देता है, वहाँ मैं जाऊँ और देखूँ कि कहीं हमें कोई आश्रय मिल सकता है या नहीं?'

गुरुजी ने कहा 'अच्छी बात है, जाओ।' फिर गुरुजी के चरणों को नमस्कार करके जिनेश्वर उस मकान पर पहुंचे। वह बडा मकान नृपति दुर्लभराज के राजपुरोहित का था। उस समय पुरोहित स्नानाभ्यंगन कर रहा था। जिनेश्वर ने एक सुन्दर भाव वाला संस्कृत श्लोक बनाकर उसको आशीर्वाद दिया। उसे सुनकर पुरोहित खुश हुआ, बोला कि कोई विचक्षण व्रती मालूम होता है। पुरोहित के मकान के अन्दर के भाग में बहुत से छात्र वेद–पाठ कर रहे थे। इनके पाठ में उन्हें कहीं–कहीं अशुद्ध उच्चारण सुनाई दिया।

तब जिनेश्वर ने कहा– 'यह पाठोच्चार ठीक नहीं है, ऐसा करना चाहिये।'

यह सुनकर पुरोहित ने कहा– 'अहो! शूद्रों को वेद–पाठ करने का अधिकार नहीं है।'

इसके उत्तर में जिनेश्वर ने कहा– 'हम शूद्र नहीं हैं। सूत्र और अर्थ दोनों ही दृष्टि से हम चतुर्वेदी ब्राह्मण हैं।'

पुरोहित सुनकर सन्तुष्ट हुआ। बोला– किस देश से आ रहे हो ?

जिनेश्वर– दिल्ली की तरफ से।

पुरोहित– कहाँ पर ठहरे हुए हो ?

जिनेश्वर– शुल्क शाला (दाण चौकी) के दालान में, हम मय अपने गुरु के सब 18 यति हैं। यहाँ के सब यतिगण हमारे विरोधी होने से हमें कहीं कोई उतरने की जगह नहीं दे रहा है।

पुरोहित ने कहा– मेरे उस चतुःशाला वाले घर में एक परदा लगाकर, एक पड़शाल में आप लोग ठहर सकते हैं। उधर के एक दरवाजे से बाहर आ–जा सकते हैं। आइये और सुख से रहिये।

प्रभावकचरितकार के अनुसार इन साधुओं के आने से पुरोहित के घर पर नगर के पण्डितों और विद्वानों का जमघट होने लगा। प्रतिदिन मध्याह्न को याज्ञिक, स्मार्त,

दीक्षित, अग्निहोत्री आदि ब्राह्मण आते और शास्त्र चर्चा करते।

कहते हैं कि वहाँ ऐसा विद्याविनोद होने लगा, जैसा ब्रह्मा की सभा में ही संभव हो सकता था। इसकी प्रसिद्धि नगर में फैली और चैत्यवासी लोग भी वहाँ आये। इन वसतिवासी साधुओं की इतनी प्रतिष्ठा देखकर उनको बहुत क्रोध आया और उन्होंने आचार्य वर्धमान तथा उनके शिष्यों से कहा कि 'आप नगर से बाहर चले जाइये। क्योंकि यहाँ पर चैत्यबाह्य श्वेताम्बर लोग नहीं ठहर सकते।' इस कथन पर राजपुरोहित ने आपत्ति की और कहा कि 'इस बात का निर्णय तो राज–सभा में होगा।' ऐसा कहे जाने पर वे सब अपने समुदाय सहित राजा के पास गए।

जिनपालोपाध्याय और सुमतिगणि के प्रबन्धों के अनुसार यह घटना कुछ दूसरे ढंग से हुई है। कहा जाता है कि जब वसतिवासी साधुओं के नगर में आने की बात चारों ओर फैल गई तो चैत्यवासियों ने उसका प्रतिकार करने का निश्चय किया। उन दिनों चैत्यालयों में पाठशालाएँ लगा करती थीं, जिनमें विभिन्न वर्गों के बहुत से विद्यार्थी पढ़ने आया करते थे। चैत्यवासियों ने इन्हीं बच्चों को अपने हाथ की कठपुतली बनाया। उनको बतासे इत्यादि का प्रलोभन देकर इस बात के लिये राजी कर लिया कि वे नगर में यह समाचार फैलायें कि कुछ बाहरी गुप्तचर यतियों के वेष में नगर में आए हुए हैं, जिनको राजपुरोहित ने अपने घर पर शरण दे रखी है। फैलते–फैलते यह सारी खबर राजा के कान में पहुँची और उसने तुरन्त पुरोहित को बुलाकर पूछा। पुरोहित ने इस बात को बिलकुल ही झूठ बतलाया और उसने कहा कि 'मेरे मकान पर जो महात्मा लोग ठहरे हैं वे साक्षात् धर्म की मूर्ति हैं और उन ठहरे हुए साधुओं पर जो भी दोष लगाया गया है वह बिलकुल झूठ है।' उसने यह भी घोषणा की कि यदि कोई इन साधुओं को गुप्तचर सिद्ध कर दे तो मैं एक लाख पारुत्थ (एक तरह की स्वर्ण मुद्रा) इनाम में दूँगा।

प्रभावकचरित के अनुसार पुरोहित ने राज–सभा में केवल यही कहा कि मैंने केवल गुण–ग्राहकता की दृष्टि से ही इन साधुओं को आश्रय दिया है और इन चैत्यवासियों ने इनका बहुत अपमान किया है। इसमें यदि मेरा कोई अपराध हो तो मैं दण्ड ग्रहण करने के लिए तैयार हूँ। कहते हैं कि राजा समदर्शी था। वह मुस्करा कर बोला–

मत्पुरे गुणिनः कस्मादेशान्तरत आगताः।
वसन्तः केन वार्येत को दोषस्तत्र दृश्यते।।

इस पर चैत्यवासियों ने राजा को याद दिलाया कि उस नगर के संस्थापक चापोत्कट वंशीय वनराज का पालन पोषण श्री शीलगुणसूरिजी ने किया था और इसी के फलस्वरूप वनराज ने 'वनराज–विहार' नामक पार्श्वनाथ मन्दिर की स्थापना करके यह व्यवस्था दे दी थी कि यहाँ केवल चैत्यवासी यतिजन ही ठहर सकते हैं। राजा ने अपने पूर्वजों की व्यवस्था का पालन करना अपना धर्म बतलाते हुए कहा कि 'गुणियों का सम्मान भी तो अवश्य होना चाहिये' इसलिये राजा ने चैत्यवासियों से आये हुए मुनियों को वहाँ रहने देने के लिये आग्रह किया।

कहते हैं कि इसी समय ज्ञानदेव नामक शैवाचार्य, जो कि राजा का गुरु था, वहाँ आ पहुँचा। राजा ने सत्कारपूर्वक गुरु का स्वागत करके उनसे निवेदन किया– 'हे प्रभो! ये जैन ऋषि लोग यहाँ आये हुए हैं, इनको आप उपाश्रय प्रदान करें।'

ऐसा सुनकर वह तपस्वी शैव हंसते हुए बोला, 'महाराज! आप गुणियों का सत्कार कर रहे हैं, यह बहुत अच्छी बात है। मैं इसको अपने उपदेशों से होने वाले फलों की निधि समझता हूँ। वस्तुतः शिव और जिन एक ही हैं। केवल मूर्खतावश इनको और मान लिया गया है। दर्शनों में भेद मानना मिथ्यामति का चिह्न है।' ऐसा कहकर उन्होंने 'त्रिपुरुष प्रासाद' नामक मुख्य शिव मन्दिर के पास ही कणहट्टी में आश्रम बनवाने के लिये अनुमति प्रदान की और एक ब्राह्मण को यह कार्य करने के लिये नियुक्त किया और थोड़े दिनों में ही उपाश्रय तैयार हो गया। संभवतः इसी समय से वसतियों अर्थात् उपाश्रयों की परम्परा शुरु हो गई। प्रभावकचरितकार ने लिखा है–

ततः प्रभृति सञ्जज्ञे वसतीनां परम्परा।
महद्भिः स्थापिते वृद्धिमश्नुते नात्र संशयः।।

गणधरसार्द्धशतक बृहद्वृत्ति तथा युगप्रधानाचार्य गुर्वावली के अनुसार चैत्यवासी लोग केवल उक्त दो ही प्रयत्न करके चुप नहीं बैठ गये अपितु उन्होंने एक वाद

विवाद में नवागन्तुक मुनियों को नीचा दिखलाने का भी प्रयत्न किया। वाद–विवाद राजा दुर्लभराज के सन्मुख होना तय हुआ। स्थान पंचासर पार्श्वनाथ का बड़ा मन्दिर चुना गया। कहते हैं कि निश्चित् दिवस पर सूराचार्य के नेतृत्व में 84 चैत्यवासी आचार्य खूब सज–धजकर वहाँ पर उपस्थित हुए। ठीक समय पर राजा भी वहाँ आ गया और आचार्य वर्धमान तथा उनके शिष्य आदि भी वहाँ पर पधारे। राजा ने दोनों पक्षों के लोगों को ताम्बूल आदि से सत्कृत करना चाहा। चैत्यवासियों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। परन्तु जब वर्धमान के पक्ष की बारी आई तो उन्होंने उत्तर दिया कि साधुओं को ताम्बूल भक्षण का निषेध है और उसका खाना गोमांस भक्षण के बराबर है–

ब्रह्मचारी–यतीनां च विधवानां च योषिताम्।
ताम्बूलभक्षणं विप्र गोमांसान्न विशिष्यते।।

इसके पश्चात् शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। एक ओर से पण्डित जिनेश्वर और दूसरी ओर से सूराचार्य थे। शास्त्रार्थ सूराचार्य ने प्रारम्भ किया। उनका कहना था कि 'जिन–गृहवास ही मुनियों के लिये समुचित हैं और वहीं पर निरपवाद ब्रह्मव्रत का पालन संभव हो सकता है।' उनका कहना था कि 'वसतिवास अपवाद से रहित नहीं है, इसलिये त्याज्य है।'

सूराचार्य ने अनेक युक्तियों के द्वारा अपने पक्ष का समर्थन किया, परन्तु पंडित जिनेश्वर ने उन सभी युक्तियों का खण्डन बड़ी योग्यता के साथ करते हुए वसतिमार्ग का प्रतिपादन किया। उन्होंने अत्यन्त स्पष्ट और कटु आलोचना करते हुए चैत्यवास के तत्कालीन कलुषित और अपवाद पूर्ण वातावरण को मुनि–जीवन के लिये सर्वथा अनुपयुक्त तथा असंगत बतलाया।

पंडित जिनेश्वर की वाक्–पटुता, अकाट्य तर्क शैली तथा प्रकाण्ड पाण्डित्य से न केवल उनके प्रतिपक्षी ही पराभूत और पराजित हुए, अपितु वहाँ पर बैठे हुए निष्पक्ष विद्वान तथा गणमान्य लोग भी अत्यन्त प्रभावित हुए।

दुर्लभराज ने तत्क्षण 'आप खरे हो?' ऐसा कहते हुए ''खरतर विरुद'' दिया, तब से खरतरगच्छ की परम्परा प्रारम्भ हुई।

आचार्य जिनेश्वर न केवल वाक्चातुरी और शास्त्रचर्चा के ही आचार्य थे अपितु लेखिनी के भी प्रौढ़ आचार्य थे। आपने 'प्रमालक्ष्म' वृत्ति सह और आपके भ्राता श्री बुद्धिसागरसूरि ने बुद्धिसागर व्याकरण तथा छन्दःशास्त्र रचकर जैन वाङ्मय में जैन–दर्शन और व्याकरण साहित्य की जो अभूतपूर्व श्री–वृद्धि की है वह साहित्य–संसार के लिये संस्मरणीय है। आपके प्रणीत निम्न ग्रन्थ और प्राप्त होते हैं–

1. अष्टक प्रकरण वृत्ति र. वि.सं. 1080 जालोर श्लोक 3374, प्रकाशित
2. चैत्यवन्दनक सं. 1096 जालोर (पत्र 35, थाहरु भ.)
3. कथाकोष प्रकरण स्वोपज्ञ वृत्तिसह, वि. सं. 1108, श्लोक 5000, प्रकाशित
4. पञ्चलिंगी प्रकरण, प्रकाशित
5. निर्वाण लीलावती कथा, वि. सं. 1092 अप्राप्त
6. षट्स्थान प्रकरण (श्रावक वक्तव्यता) श्लोक 103, प्रकाशित
7. सर्वतीर्थ–महर्षि कुलक, गाथा–26
8. वीरचरित्र, अप्राप्त
9. छन्दोनुशासन (जैसलमेर ज्ञानभंडार, प्रतिलिपि मेरे संग्रह में) इत्यादि।

आचार्य जिनेश्वरसूरि का शिष्य समुदाय भी अति विशाल था। आपने अपने स्व–हस्त से जिनचन्द्रसूरि, अभयदेवसूरि, धनेश्वरसूरि अपरनाम जिनभद्रसूरि और हरिभद्रसूरि को आचार्य पद तथा धर्मदेव गणि, सुमति गणि, सहदेव गणि और विमल गणि को उपाध्याय पद प्रदान किया था। चार आचार्य और तीन उपाध्याय जहाँ शिष्य हों वहाँ मुनिमण्डल का अत्यधिक संख्या में होना स्वाभाविक ही है।

आचार्य जिनेश्वरसूरि का स्वर्गवास कब और कहाँ हुआ निश्चित नहीं है। किन्तु आपकी वि.सं. 1108 में रचित कथाकोष प्रकरण की स्वोपज्ञ वृत्ति प्राप्त है। अतः इसके बाद ही आप इस नश्वर देह को छोड़ चुके हों, तथा आचार्य अभयदेवसूरि ने स्थानाङ्गसूत्र की वृत्ति वि.सं. 1120 में पूर्ण की है उसमें विद्यमान, राज्ये, इत्यादि शब्दों का प्रयोग न होने से मान सकते हैं कि वि.सं. 1120 के पूर्व ही जिनेश्वरसूरि का स्वर्गवास हो चुका था।

–दादा श्री जिनकुशलसूरि जन्म सप्तम शताब्दी समरोह स्मृति ग्रन्ध (1983) से साभार।

इतिहास

अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ : इतिहास के झरोखे से...

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

यह परम आनन्द का विषय है कि तीर्थंकर परमात्मा की साक्षात् अनुपस्थिति में परमात्मा की वाणी एवं परमात्मा की सातिशय प्रतिमा हमें उपलब्ध है।

इस युग में जिनबिंब एवं जिनागम ही हमारे लिये सहारा है। शास्त्रों में कल्याणक भूमियों को तीर्थ माना है। श्री सम्मेतशिखर, अष्टापद, गिरनार, पावापुरी, चंपापुरी आदि तीर्थ इसी परिभाषा में आते हैं।

जहॉ अतिशय युक्त परमात्मा की प्रतिमाऐं जहॉ बिराजमान है, वे अतिशय तीर्थ कहलाते हैं। श्री नाकोडा, शंखेश्वर, नागेश्वर, जीरावला, अवंति, मक्षी, कापरडा, जैसलमेर आदि तीर्थ इस गणना में आते हैं।

इन तीर्थों के निर्माण, स्थापना के पीछे विशिष्ट इतिहास होता है, चमत्कार की घटनाऐं होती हैं। जिसके कारण इन तीर्थों की महिमा पूरे विश्व में प्रसारित होती है।

ऐसा ही एक महान् तीर्थ है– श्री अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ!

जिसका इतिहास परमात्मा के अतिशय और चमत्कारों से ओतप्रोत है।

इस तीर्थ में मूलनायक परमात्मा के रूप में अतिप्राचीन वही प्रतिमा बिराजमान है, जिस प्रतिमा का निर्माण अवंति सुकुमाल के द्वारा हुआ था।

बहुत पुरानी घटना है। सौ नहीं... पाँच सौ नहीं... हजार नहीं... दो हजार से भी अधिक वर्ष पुरानी घटना है।

जैन जगत के मूर्धन्य आचार्य सिद्धसेन दिवाकर उज्जैन नगर में पधार रहे थे। शासन कर रहे थे उस प्रदेश पर सम्राट विक्रमादित्य। सम्राट को जैन धर्म का परिचय अभी हुआ नहीं था। जैन साधु के त्याग से वे अनजान थे। वीतराग मार्ग का उन्हें कोई पता नहीं था। तीर्थंकरों के नाम अभी सुने नहीं थे। सम्राट विक्रम उदार था... परोपकारी था... पर शुद्ध धर्म से अपरिचित था। आचार्य सिद्धसेन दिवाकर गुरु–आज्ञा के उल्लंघन का प्रायश्चित्त कर रहे थे। राजा को प्रतिबोध देना, प्रायश्चित्त देना, प्रायश्चित्त विधि का हिस्सा था।

आचार्य नंगे पाँव चलकर एक अवधूत बाबा की वेशभूषा में उज्जैन पहुँचे। एक शिवालय मंदिर में जाकर शिवलिंग की ओर अपने पाँव रखकर लेट गये। पुजारियों ने हटाना... डांटना... फटकारना शुरू किया परन्तु आचार्यश्री मुस्कराते रहे। महादेव के मंदिर का अपमान करना, उन्हें इष्ट नहीं था। यहां वर्षों से छिपे एक महान सत्य को प्रकट करना उनका लक्ष्य था। वे शुद्ध भावों से परिपूर्ण होकर एक अनूठे लक्ष्य के साथ जागते हुए सो रहे थे... सोते हुए जाग रहे थे।

भगवान का ऐसा अपमान! घोर अपमान!! उसे सजा दी जाये। सम्राट ने कोड़े फटकारने की सजा सुनाई। आचार्य सिद्धसेन दिवाकर के शरीर पर कोड़ों की मार पड़ने लगी। पर आश्चर्य!! आचार्यश्री को कोई दर्द नहीं हो रहा था। मार के कोई निशान उनके शरीर पर नहीं पड़ रहे थे। आचार्यश्री मुस्करा रहे थे। उनकी मुस्कुराहट ने पुजारियों के रोष को दुगुना कर दिया वे और जोर से मार रहे थे। पर चकित थे कि मार इन्हें लग क्यों नहीं रही है?उन्हें क्या पता था कि मार इन्हें नहीं,

किसी और को लग रही है। हाँ! यह मार लग रही थी सम्राट विक्रम की रानियों को। न कोड़ा नजर आ रहा था... न चाबुक नजर आ रहा था... न फटकारने वाला नजर आ रहा था। पर शरीर नीला हुआ जा रहा था। रानियाँ चीख रही थी... चिल्ला रही थी... रो रही थी। उनके क्रन्दन को सुनकर राजा दौड़ पड़े। कुछ नजर नहीं आ रहा था... कुछ समझ नहीं आ रहा था। अचानक सम्राट को याद आया पुजारी को दिया आदेश। उन्हें लगा रानियों पर पड़ रही इस अदृश्य मार का उस आदेश के साथ कोई न कोई संबंध है।

वह बिना एक पल गवांये दौड़ पड़ा शिवमंदिर की ओर... रोका तुरन्त पुजारियों को। बाबा अभी भी मुस्करा रहा था। सम्राट ने तेजस्विता से परिपूर्ण ललाट देखा। गहरी और निश्चल निर्दोष ऑखें देखी। चमकता... दमकता... चेहरा देखा। उसके हाथ स्वतः जुड़ गये। नमस्कार की भाषा उसके होठों से निकल पड़ी।

महात्मन्! मेरा अपराध क्षमा करें। बताएं कि आप है कौन?आचार्य सिद्धसेन दिवाकर ने हल्की–सी मुस्कुराहट के साथ संक्षेप में उत्तर दिया– साधु हूँ। महात्मन्! आप शिवलिंग की ओर पाँव करके आसातना ना करें। भगवन्! आप इनकी स्तुति करें।

नहीं राजन्! ये भगवान मेरी स्तुति नहीं सह पायेंगे।

आप कीजिये तो सही। और वातावरण में आचार्य सिद्धसेन दिवाकर की गहन, मधुर आवाज गूंजने लगी– कल्याण मंदिर मुदार...!

संस्कृत भाषा के स्वरचित... तत्काल रचित श्लोक भावों की अमृत फुहार में भीगते हुए वायुमंडल में तैरने लगे। उन श्लोकों में मंत्र शक्ति थी। तंत्र शक्ति थी। एकाग्रता की शक्ति थी। पंचतत्त्वों पर नियंत्रण की शक्ति थी। आचार्यश्री के होंठों से गति कर रहे ये मंत्राक्षर हृदय से अवतरित हो रहे थे। आचार्यश्री बाह्य दृष्टि से सर्वथा बेहोश थे। अन्तर की अपेक्षा से सर्वथा होश में थे। समर्पण और पूर्ण समर्पण की भागीरथी में डुबकियाँ लगा रहे थे। लोग स्तब्ध थे। गतिविधियाँ ठहर गई थी। कोई कुछ नहीं कर रहा था। और अचानक जैसे धरती फटी! जैसे बिजली कड़की! जैसे आसमान गिरा! जैसे विस्फोट हुआ। एक जबरदस्त आवाज के साथ चमत्कार हुआ। आचार्यश्री के द्वारा 11वीं गाथा के मंत्रगर्भित... मंत्र गुंफित विशिष्ट अक्षरों का उच्चारण हुआ उसी समय शिवलिंग फटा। परतें उतरती गई और

भीतर से पार्श्वनाथ परमात्मा की प्रतिमा प्रकट हुई। लोग आंखें फाड़–फाड़ कर देख रहे थे। सम्राट हतप्रभ हो रहा था। स्तुति जारी थी, श्लोकों की सघनता में और तीव्रता आ गई थी। धुंआ छंट गया था। प्रभु पार्श्वनाथ प्रकट हो गये थे। जय–जय उद्घोष निरन्तर हो रहा था।

आचार्य सिद्धसेन दिवाकर ने अपने उपपात में बैठे सम्राट विक्रम की जिज्ञासा का समाधान करते हुए इस घटना का रहस्य बताना प्रारंभ किया। यह प्रतिमा तेईसवें तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ प्रभु की है। इस प्रतिमा का निर्माण बहुत पहले अवंति सुकुमाल के पुत्र ने किया था। शुभ मुहूर्त्त में परमात्मा की प्रतिष्ठा भी उसी ने करवाई।

राजा ने पूछा– प्रभो! यह अवंति सुकुमार किस राज्य का नरेश था?कहाँ का रहने वाला था?थोड़ा विस्तार से समझाये भगवन्।

आचार्यश्री ने अपनी आँखें बंद कर इतिहास सागर के मोती परोसते हुए कहा– अवंति सुकुमाल नरेश नहीं एक श्रेष्ठी था। इसी उज्जैन का निवासी! बहुत ऋद्धि थी। भद्रा माँ का लाड़ला इकलौता बेटा। जो पिता के अभाव में माता–पिता दोनों का प्रेम अपने लाड़ले पर लुटाया करती थी। उसकी शादी हुई थी बत्तीस कन्याओं के साथ। अपार भोग समृद्धि में जीता था वह कुमार। एक दिन उसके घर साधुओं का आना हुआ। रात्रि के प्रथम प्रहर में साधु परस्पर स्वाध्याय कर रहे थे। एक बोल रहा था, एक सुन रहा था। शास्त्रों का स्वाध्याय पास ही कक्ष में सोये हुए अवंति सुकुमाल के कानों में पड़ा। स्वाध्याय का वर्णन देवलोक की व्यवस्थाओं से संबंधित था। स्वाध्याय में नलिनीगुल्म देव विमान का विशिष्ट वर्णन उपस्थित हुआ। इस विमान की चर्चा के शब्द ज्योहीं अवंति के कानों में पड़े कि वह चौंका। उसे यह वर्णन परिचित प्रतीत हुआ। चिंतन करता रहा, शब्दों को मथता रहा, भावों में उतरता रहा और उसे जातिस्मरण ज्ञान हो आया। अपने पूर्व जन्म को प्रत्यक्ष देखने लगा। मैं इसी विमान से तो आया हूँ। क्या यह

विमान था?क्या वह ऋद्धि थी?क्या सुख की विपुलता थी?वह दौड़ पड़ा। पहुँचा आचार्यश्री के चरणों में और निवेदन किया– भगवन्! यह नलिनीगुल्म विमान में पुनः पाना चाहता हूँ?कैसे पा सकता हूँ?

आचार्य सुहस्ति एवं आचार्य महागिरि ने उसे उपदेश देना प्रारंभ किया। धर्म समझाया। धर्म का परिणाम समझाया। धर्म का लक्ष्य समझाया। वह समझ गया। सुख पाने की कामना दुःख है। यही बंधन है। असली आनंद तो मोक्ष में है। वह वैराग्य रंग में रंग गया। उसकी सोच बदल गई। अब न आसक्ति रही... न तिरस्कार! अब थी सम वृत्ति... संतुलन... सहजता। वह संयमी बन गया। उसी रात पावन सलिला क्षिप्रा नदी के पास श्मशान भूमि के एकान्त वातावरण में निश्चल हो साधना करने लगा। सर्प डंसने लगे। बिच्छुओं के डंक भी उसे अस्थिर न कर सके और यह तो चरम स्थिति थी उसकी धृति की... धैर्य की... समता की... दृढ़ता की... जब आये कुछ सियार... और साधु को निर्जीव मानकर खाने लगे... नोचने लगे... साधु जाग गया था। उसने अभिग्रह लिया था, संकल्प किया था। यह तो परीक्षा थी... उसे पूर्ण उत्तीर्ण होना था। और वह जीत गया। एक शरीर छोड़ा... एक शरीर पाया। आखिर छलांग लग ही गई। मुक्ति निकट हो गई।

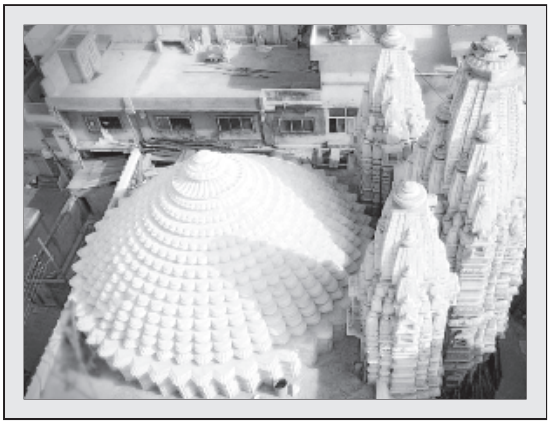
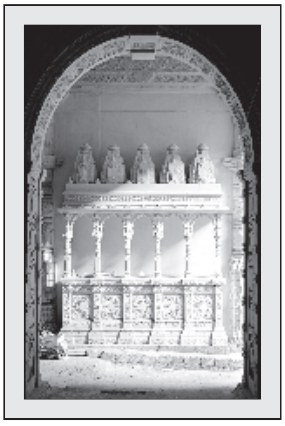

वह स्वर्गवासी हो फिर से नलिनीगुल्म विमान का स्वामी हो गया। उस देव को यह विमान मिलने से प्रसन्नता नहीं थी किंतु साधना अखंड रहने व मुक्ति–मंजिल की ओर चार कदम बढ़ने के कारण अतीव आनंद का अनुभव था।

सम्राट विक्रम और सारी सभा आश्चर्य मिश्रित आनंद के साथ यह घटना सुन रही थी। आचार्यश्री ने घटना के सूत्र को आगे बढ़ते हुए कहा–सुबह माँ भद्रा एवं पुत्रवधूओं ने जब मुनि अवंति सुकुमाल के दर्शन करने चाहे तब उसे वाटिका में न पाकर प्रश्न किया– भगवन्! अवंति मुनि दिखाई नहीं दे रहे हैं?

आचार्य ने गंभीर वदन के साथ कहा– माँ! यह जहां से आया था। वहीं चला गया।

प्रभो! वह मंदिर किसने बनाया?सम्राट ने अधीरता पूछा। हाँ! मैं मूल बात पर लौट रहा हूँ। उस घटना के बाद संसार की असारता का बोध प्राप्त कर माँ भद्रा और उसकी इकत्तीस पुत्रवधुओं ने चारित्र ग्रहण कर लिया। गर्भवती होने के कारण एक पुत्रवधू चारित्र न ले सकी। पुत्र जन्म हुआ। महाकाल उसका नाम रखा गया। उसी महाकाल ने अपने पिता की स्मृति में उनके स्वर्गवास स्थल पर विशाल महाप्रासाद का निर्माण कराया, जिसमें अवंति पार्श्वनाथ परमात्मा को बिराजमान किया गया। चूंकि इस मंदिर का निर्माण महाकाल ने किया था इस कारण यह महाकाल मन्दिर भी कहलाता रहा। तब से ये अवंति पार्श्वनाथ एक महान तीर्थ के रूप में प्रतिष्ठित होकर परमात्मा, परमात्म पद की प्रेरणा देने के साथ–साथ भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण कर रहे हैं।

राजा– भगवन्! फिर अवंति पार्श्वनाथ का यह मंदिर शिवमंदिर और प्रतिमा शिवलिंग में कैसे रूपांतरित हो गई?

आचार्य– राजन्! धर्म तो एक है– वह है आत्मधर्म! उसका रास्ता भी एक है, वह है– अहिंसा! भेद कहीं नहीं है। धर्म में भेद तो हो ही नहीं सकता। भेद हमारे स्वार्थ में है, बस! जब स्वार्थ हावी हो जाता है तब धर्म हार जाता है। बहुत बार लोगों को लगता है कि धर्म जीता। पर हकीकत में धर्म हारता है। अधर्म जीतता है। यहाँ भी ऐसा ही हुआ। परिणाम यह हुआ कि प्रतिमाजी पर परतें चढ़ा दी गई। इसे गोलाकार बना दिया गया। इस प्रकार शिवलिंग का स्वरूप पूजा जाने लगा। 200 वर्षों से पार्श्वनाथ प्रभु शिवलिंग के रूप में पूजे जा रहे हैं। आज परतें हट गई बाहर की और अन्तर का सत्य प्रकट हो गया।

भगवन्! मैं जिन–धर्म को जानना चाहता हूँ.. समझना चाहता हूँ और भगवन्! मैं जिन–धर्म अपनाना चाहता हूँ। आप कृपा करें मुझ पर। मैं श्रमण तो नहीं बन सकता पर श्रमणोपासक बन कर अपने जीवन को कृतार्थ करना चाहता हूँ। आचार्य सिद्धसेन दिवाकर का वदन चमक उठा। वे असीम आनंद से भर उठे। किसी एक नरेश को प्रतिबोध देना, उनके प्रायश्चित्त का हिस्सा था। अपनी मंजिल करीब पाकर वे परम प्रसन्नता में नहा उठे। उसी समय सम्राट विक्रमादित्य को अपने पास बुलाया। उन्हें विधिपूर्वक पंचमंगल महाश्रुतस्कंध रूप नवकार महामंत्र प्रदान किया। सिर पर सूरिमंत्र से अभिमंत्रित कर वासक्षेप किया और उसी समय सारी सभा जय–जयकार कर उठी।

अवंति पार्श्वनाथ तीर्थ की जय!
अवंति पार्श्वनाथ भगवान की जय!
आचार्य सिद्धसेन दिवाकर की जय!!
विक्रमादित्य के जैनत्व की जय!!
जिनशासन देव की जय!!!

60

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

—आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

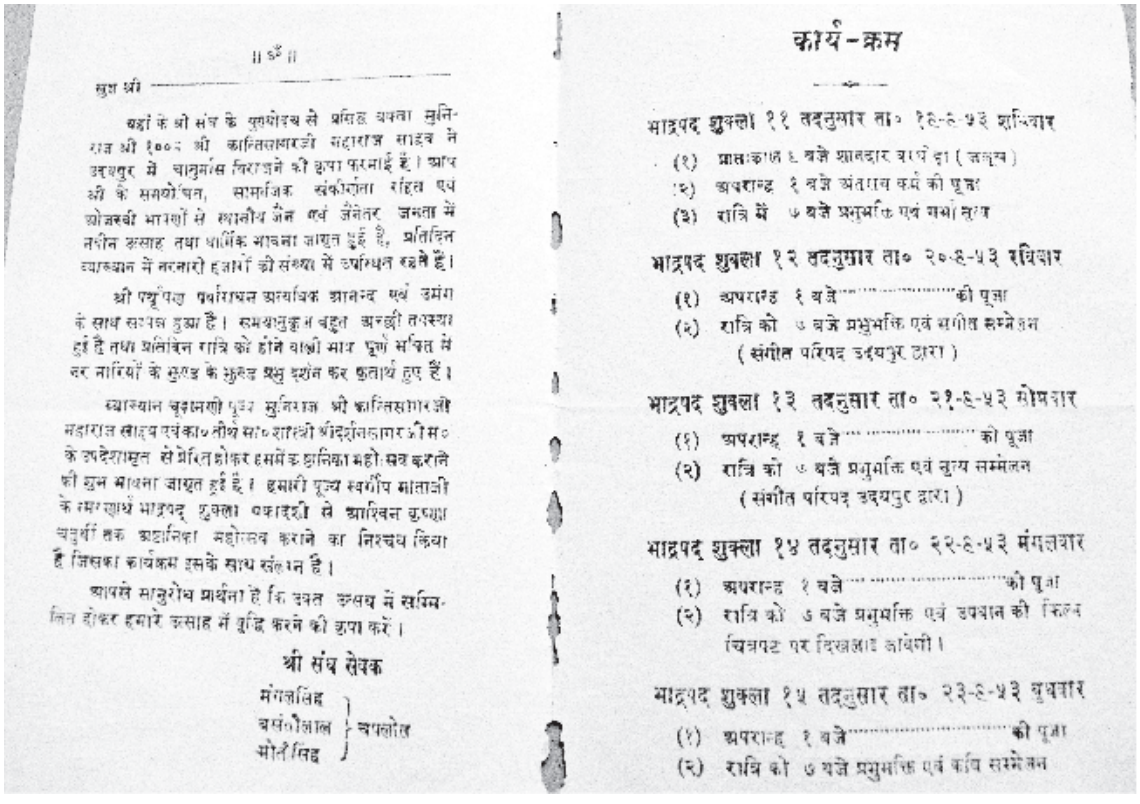

॥ ॐ ॥

शुभ श्री ——————————

यहां के श्री संघ के पुण्योदय से प्रसिद्ध वक्ता मुनिराज श्री १००८ श्री कान्तिसागरजी महाराज साहब ने उदयपुर में चातुर्मास विराजने की कृपा फरमाई है। आप श्री के समयोचित, सामाजिक संकीर्णता रहित एवं ओजस्वी भाषणों से स्थानीय जैन एवं जैनेतर जनता में नवीन उत्साह तथा धार्मिक भावना जागृत हुई है, प्रतिदिन व्याख्यान में नरनारी हजारों की संख्या में उपस्थित रहते हैं।

श्री पर्यूषण पर्वाराधन अत्यधिक आनन्द एवं उमंग के साथ सम्पन्न हुआ है। समयानुकूल बहुत अच्छी तपस्या हुई है तथा प्रतिदिन रात्रि को होने वाली भाव पूर्ण भक्ति में नर नारियों के झुण्ड के झुण्ड प्रभु दर्शन कर कृतार्थ हुए हैं।

व्याख्यान चूड़ामणी पूज्य मुनिराज श्री कान्तिसागरजी महाराज साहब एवं का० तीर्थ सा० शास्त्री श्री दर्शनसागरजी म० के उपदेशामृत से प्रेरित होकर हमारी अष्टान्हिका महोत्सव कराने की शुभ भावना जागृत हुई है। हमारी पूज्य स्वर्गीय माताजी के स्मरणार्थ भाद्रपद शुक्ला एकादशी से आश्विन कृष्णा चतुर्थी तक अष्टान्हिका महोत्सव कराने का निश्चय किया है जिसका कार्यक्रम इसके साथ संलग्न है।

आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि उक्त उत्सव में सम्मिलित होकर हमारे उत्साह में वृद्धि करने की कृपा करें।

श्री संघ सेवक

मंगलसिंह
बसंतीलाल } चपलोत
मोतीसिंह

कार्य-क्रम

भाद्रपद शुक्ला ११ तदनुसार ता० १९-९-५३ शनिवार

(१) प्रातःकाल ९ बजे शानदार वरघोड़ा (जलूस)
(२) अपरान्ह १ बजे अंतराय कर्म की पूजा
(३) रात्रि में ७ बजे प्रभुभक्ति एवं गर्बा नृत्य

भाद्रपद शुक्ला १२ तदनुसार ता० २०-९-५३ रविवार

(१) अपरान्ह १ बजे .... की पूजा
(२) रात्रि को ७ बजे प्रभुभक्ति एवं संगीत सम्मेलन
(संगीत परिषद उदयपुर द्वारा)

भाद्रपद शुक्ला १३ तदनुसार ता० २१-९-५३ सोमवार

(१) अपरान्ह १ बजे .... की पूजा
(२) रात्रि को ७ बजे प्रभुभक्ति एवं नृत्य सम्मेलन
(संगीत परिषद उदयपुर द्वारा)

भाद्रपद शुक्ला १४ तदनुसार ता० २२-९-५३ मंगलवार

(१) अपरान्ह १ बजे .... की पूजा
(२) रात्रि को ७ बजे प्रभुभक्ति एवं उपधान की फिल्म चित्रपट पर दिखलाई जावेगी।

भाद्रपद शुक्ला १५ तदनुसार ता० २३-९-५३ बुधवार

(१) अपरान्ह १ बजे .... की पूजा
(२) रात्रि को ७ बजे प्रभुभक्ति एवं कवि सम्मेलन

पूज्य गुरुदेवश्री के जीवन-संस्मरणों का वातायन उद्घाटित था। पूज्यश्री हमारे समक्ष अपने अनुभवों/घटनाओं/ परिस्थितियों/स्थितियों/ को साझा कर रहे थे।

हम सभी शिष्य जिज्ञासा से पूर्ण मौन के साथ गुरुदेवश्री की उपासना कर रहे थे। नीरव वातावरण में पूज्यश्री अतीत में विचरण कर रहे थे। वे याद कर रहे थे सन् 1953 के उदयपुर चातुर्मास को! यादगार, ऐतिहासिक चातुर्मास था। आज जो उदयपुर में ओसवाल समाज में जाहोजलाली है, वह उस चातुर्मास को आभारी है।

उस समय उदयपुर का समाज दो भागों में बंट गया था। कुछ घटनाऐं ऐसी घटित हुई, जिनके कारण मंदिरमार्गी समाज और स्थानकवासी समाज में परस्पर वैमनस्य छा गया था। परस्पर वैवाहिक व्यवहार पर समाज ने रोक लगा दी थी। लोग अत्यन्त पीड़ित थे।

नये संबंधों पर रोक थी। पहले की गई सगाईयाँ छूट रही थी। बहु मंदिरमार्गी होती और वह अपने पीहर जो कि स्थानकवासी घर होता, वहाँ वह जाती तो वहाँ के खाने-पीने पर प्रतिबंध था। उसे पानी भी अपनी ससुराल से ही ले जाना होता।

ऐसी विषम स्थिति में पूज्यश्री का मूर्तिपूजक श्रीसंघ

की ओर से चातुर्मास होने जा रहा था। दोनों ही पक्ष पूज्यश्री के प्रति आशाभरी निगाहों से देख रहे थे। पूज्यश्री के जैन एकता के प्रवचनों से उन्हें आश बंधी थी।

पूज्यश्री ने चातुर्मास प्रवेश के साथ ही यह विषय हाथ में लिया। पूज्यश्री के प्रवचनों में सारा समाज उपस्थित होता था। यह विवाद दस वर्षों से चल रहा था। हर क्षेत्र में इस विवाद ने उथल पुथल मचा रखीथ ी।प रस्परक टुताल गातारब ढ़तीज ार हीथ ी। उस समय के राजस्थान के मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाडिया ने इस विवाद को निपटाने का बहुत प्रयत्न किया पर सफलता नहीं मिली।

पूज्यश्री की नेह भरी दृष्टि, मधुरता से पूर्ण वार्तालाप, सभी के प्रति समभाव और सिंह गर्जना के साथए कताक ेस ंदेशन ेद ोनोंस माजोंक ोअ पनीह ठक ो त्यागने पर मजबूर कर दिया।

संवत्सरी के पावन अवसर पर दोनों ही समाजों के आगेवानों ने परस्पर गले मिलकर क्षमायाचना कर इस विवाद का अन्त कर दिया।

सारा समाज एक हो गया। विवाद का अन्त हुआ। खुशियों का जो माहौल फैला, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। समाज पूज्यश्री के इस उपकार को कभी विस्मृत नहीं कर सकता।

पर्युषण के तुरंत बाद श्री मंगलसिंहजी बसंतीलालजी मोतीसिंहजी चपलोत परिवार की ओर से अपनी माताजी के स्मरणार्थ अष्टाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया था।

भाद्रपद शुक्ला एकादशी शनिवार ता. 19.91953 से प्रारंभ यह महोत्सव ता. 26.9.1953 को पूर्ण हुआ था।

आत्मीय अर्पणा

सूरिजी सिद्धि पाई, जब लक्ष्मी सामने आई।
जग में खुशियाली छाई, उर में हर्ष–लहरें लहराई।।
मोकलसर नंदन को, मेरा विधिवत् है वन्दन।
चरणों में शीष झूकाकर, करती हूँ तेरा अभिनन्दन।।
अश्रु से प्रक्षालन चरणों का, चित्त चंदन से करती पूजन।
भाव भरे शब्दों से करूँ पूजा, नित करती हूँ अभिवादन।।
ताल न जानुं छंद न जानूं, फिर भी लिखके मन को मनाऊँ।
तेरे दर पे आकर के, अभिवन्दन का साज सजाऊं।।
गीत गान का न है गुंजन, फिर भी हुआ है चित्त स्पंदन।
बने आप सोने से कुंदन, भावों से मानो मेरा अभिवंदन।।
ना हे संगीत का सूर, फिर भी हैं भावों का पूर।
दिल से करना कभी ना दूर, विनती सुन लेना हजूर।।

–पादपद्मरेणु महत्तरा
साध्वी दिव्यप्रभाश्रीजी म.

सूरिमंत्र साधना वर्धापना गीतिका

हे गुरुवर! सूरि मंत्र का ये पावन, अवसर सुहाना आया।
तप और जप का ये नजारा...
हे गुरुवर! दास तेरा आया है, शीश झुकाया है।
चरणों में रखना उम्रभर... तुम ही हो।।
नभ में सूर्य सूरि तुम ही हो
गच्छ में नूर सूरि तुम ही हो...।।
जिन्दगी ये रोशन तुझसे हुई है,
गुरुवर को पाया मंजिल मिली है।
गुरुवर! मेरा सहारा हो, तारणहारा हो...
चरणों में रखना उम्रभर...।।1।।
राज है ये दुनिया समझ नहीं आती,
किसको बताऊँ यहाँ मेरी कहानी।
गुरुवर! तेरा साथ पाया मैंने, सुलझी कहानी मेरी...
चरणों में रखना उम्रभर...।।2।।
ज्ञान अनंत तुझमें रहा है,
साधना के पुष्पों से महक रहा है।
गुरुवर! साधना की डोर से संयम निभाना है...
चरणों में रखना उम्रभर...।।3।।

–हेमगुरु चरणरज मुमुक्षु नीलिमा भंसाली

प्रेरक प्रसंग

अश्रुओं का निर्मल जल

मुनि मनितप्रभसागर

हृदयस्थ भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है- अश्रु! हृदय की गंगोत्री से बहती हुई आँसूओं की गंगा का निर्मल जल सर्वाधिक पवित्र होता है, बशर्ते उसमे स्वार्थ और स्वांग का तेजाब मिला हुआ न हो।

अश्रु का अर्थ होता है-अपने स्नेह की मौन अभिव्यक्ति। जब शब्द मौन हो जाते हैं, तब जीवन-कथा को आँसू ही व्यक्त करते हैं। जब यह पवित्र मेघ आँखों के आकाश से भावनाओं के धरातल पर बरसता है, तब पत्थर दिल भी पिघल जाते हैं। यह कथन अतिशयोक्ति से परिपूर्ण नहीं होगा कि अश्रु-बूंदों का विशाल साम्राज्य है।

भक्त से लेकर भगवान तक, अमीर से लेकर गरीब तक, गाँव से लेकर शहर तक, मनुज से लेकर देवलोक तक इसका प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

आँसूओं के प्रकार

सीता, सीतोदा, लवणोदधि, क्षीरोदधि, घृतोदधि, गंगा, यमुना आदि के भेद से जल बहुत प्रकार का होता है जैसे-कडवा, खारा, कटु, मधुर आदि, वैसे ही आँसू भी अनेक प्रकार के होते हैं। खुशी, दु:ख, सुख, करूणा, भक्ति, श्रद्धा, सान्तवना, प्रेम आदि कारणों के आँसू भी विविध भेदों में विभक्त हो जाते हैं।

असली-नकली आँसू

यद्यपि आँसू तो आँसू ही हैं पर उनके पीछे रहे हुए कारणों से बनावटी व यथार्थ इन दो भेदों में आँसू समाहित होते हैं। दिखावटी आँसू को 'घडियाली आँसू' कहा जाता है तो स्नेह के स्रोत से प्रवाहित अश्रु-बिन्दुओं को चन्दनबाला के आँसू कहा जा सकता है। जहाँ मात्र आश्वासन होता है, आचरण और हृदय का न जुड़ाव होता है, न उनमें वास्तविकता होती है, वे घडियाली आँसू कांच के उन दुकडों के समान होते हैं, जो सूर्य की किरणों से चमकते हैं पर उनका तुच्छ मूल्य होता है।

इस संदर्भ में राजकुमार श्रीपाल को धोखा देकर उसे सागर में गिराने वाले धृष्ट धवल सेठ का रुदन स्मर्त्तव्य है। अरे! सच्चे आँसू तो सच्चे मोतियों से भी महंगे होते हैं। मोती का हार तो मात्र एक कण्ठ को शोभित करता है पर आँखों के द्वार पर अश्रुओं के तोरणद्वार सजने से तो हजारों जीवन चमक-दमक उठते हैं।

रूदन सामान्य, परिणाम असामान्य-

रुदन की प्रक्रिया प्राय: हर प्राणी के जीवन से जुड़ी हुई है। कोई किसी के वियोग में रोता है तो कोई किसी के संयोग में।

दानव हो या मानव, पशु हो या पक्षी, हर जीव अपने भावों की अभिव्यक्ति आँखों को विविध भावों के जल से भरकर करता है। बालक ही नहीं, युवा, प्रौढ और वृद्ध भी अश्रु-अमृत की समृद्धि से समृद्ध होते हैं। कोमल स्त्रीवर्ग में ही नहीं, कठोर, अनुशासक एवं फौलादी हृदयी पुरुष वर्ग में भी अश्रुओं का प्रवाह देखा जा सकता है।

शिशु मीठी थपथपाहट से तुरन्त रोना बंद कर देता है पर युवाओं को आँसू भीतर ही भीतर सालते रहते हैं।

आँसूओं में क्या नहीं?

जो सरोवर निर्मल हंसों की क्रीडा से तरंगित होता है, उसी सरोवर में बगुले भी होते हैं। जिस तालाब में पद्म-कमल की सुगंध प्रसारित होती है, उसी में कीचड़ की दुर्गंध का भी सद्भाव होता है।

अश्रुओं के पीछे भिन्न-भिन्न आशय होते हैं। राजनीति, प्रपंच, भय, वियोग, संयोग, सुख, दु:ख, ममता, स्नेह, समर्पण, विश्वास, मैत्री जैसे सैंकडों अभिप्रायों से जुडे आँसू न केवल घर-परिवार तक सीमित हैं अपितु इसने समाज में सर्वत्र अपना साम्राज्य जमाया है।

(शेष पृष्ठ 25 पर)

मुमुक्षु शुभम् कुमार लूंकड की दीक्षा 18 फरवरी को

इन्दौर 28 अक्टूबर। जोधपुर निवासी श्रीमान् मोतीलालजी सौ. उमादेवी के सुपुत्र परम वैरागी मुमुक्षु श्री शुभम्कुमार लूंकड की भागवती दीक्षा उज्जैन नगर में अवन्ति पार्श्वनाथ तीर्थ की प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर 18 फरवरी 2019 को संपन्न होगी।

पूज्यश्री के सूरिमंत्र की तीसरी पीठिका साधना समारोह के महामांगलिक अवसर पर इस शुभ मुहूर्त्त की घोषणा की गई।

मुमुक्षु शुभम् लूंकड का पूरा परिवार दीक्षा का शुभ मुहूर्त्त प्राप्त करने के लिये इन्दौर पूज्यश्री की सेवा में पहुँचा। श्रावक प्रवर श्री मोतीलालजी लूंकड ने कहा– शुभम् की तीव्र भावना को देखते हुए इसे चारित्र ग्रहण की अनुमति दी है। आपश्री इसकी दीक्षा का मुहूर्त्त प्रदान करें।

शुभम् की बहिन सौ. श्रीमती शिल्पा ने शुभम् के बचपन की घटनाओं का उल्लेख किया, सभी की आंखों से अश्रु बहने लगे। शुभम् के पिताजी श्री मोतीलालजी लुंकड ने अपने लाडले पुत्र के वैराग्य–भावों की कसौटी पर खरा उतरने की कहानी सुनाते हुए पूज्य खरतरगच्छाधिपतिश्री से मुहूर्त्त प्रदान करने का निवेदन किया।

मुमुक्षु शुभम् लूंकड के भाषण ने सभी को प्रभावित किया। उसने अपने उपकारी पूजनीया गुरुवर्या गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. सा. पू. मासी म.सा. श्री हर्षप्रज्ञाश्रीजी म. आदि के उपकारों का विस्तार से वर्णन किया। उसने अपने माता–पिता के उपकारों का वर्णन करते हुए कई घटनाऐं सुनाई। सभी की आंखों से बहते आंसु चारित्र भावों की अनुमोदना कर रहे थे।

उसने कहा– आज मेरे आनंद का छोर नहीं है। जिस मार्ग पर चलने के लिए वर्षों से लालायित था, जिसके लिए अनेक संकल्प लिए वे आज सफल और सार्थक हो रहे है। मैं एक लूंकड परिवार से अलग हो रहा हूँ, और दूसरे लूंकड परिवार का हिस्सा बनने जा रहा हूँ।

परिवार को शुभ मुहूर्त्त प्रदान करते हुए पूज्यश्री ने कहा– 20 वर्ष की उम्र में परिपक्व उम्र में चारित्र लेना, इससे बडा कोई चमत्कार नहीं हो सकता।

उन्होंने कहा– माता–पिता का यह उपकार है कि उन्होंने जीवन दिया, संस्कार दिये और चारित्र की अनुमति दी।

मुहूर्त्त ग्रहण करते ही शुभम् नृत्य करने लगा, मानो उसके हाथ में रजोहरण आ गया है। दीक्षा मुहूर्त्त घोषणा से समारोह की महिमा में चार चांद लग गये।

इस अवसर पर मुमुक्षु मंडल की ओर से मुमुक्षु अमित बाफना ने दीक्षार्थी शुभम् को बधाई दी।

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ इन्दौर एवं साधना के लाभार्थी श्री विजयजी मेहता परिवार की ओर से दीक्षार्थी शुभम् एवं उनके परिवार का अभिनंदन किया गया।

मुमुक्षु शुभम लुंकड दीक्षा मूहुर्त उद्घोषणा उत्सव इन्दौर 28-10-2018

विमलप्रभा प्रिमियर लिग २०१८

V P L विजेता - महालक्ष्मी मालपुरा टिम

नेम - राजुल कपल शिवीर

कपल शिवीर विजेता - प्रिया देवेंद्र सेठिया

भव्य चातुर्मास,नंदुर

आशिर्वाद

प.पू.गच्छाधिपती आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा.

प.पू.गच्छाधिपती आचार्य श्री जि
सूरिमंत्र साधना की तृ
प.पू.धवलयशस्वी विमलप्रभा
२४ दिवसीय नवकार महामंत्र का
२८ सितंबर- पूर्णाहुति में स

प.पू धवलयशस्वी श्री विमलप्र
प.पू श्री चारुलताश्रीजी म.सा.एवं

बेटि - बचाव

बार (महा).२०१८

पावननिश्रा

प.पू.धवलयशस्त्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा.

ानमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा.
तीय पाठिका निमित्त
श्रीजी म.सा.की प्रेरणा से,
जाप सु.६से-शा.६बजे तक चला
ामूहिक जाप करवाया गया

गा

भाश्रीजी म.सा की सुशिष्या.
प.पू श्री चारित्रप्रियाश्रीजी म.सा.

नाटिका

६ आवश्यक नाटिका

प्रतिक्रमण भावयात्रा

सूरि मंत्र महामांगलिक महोत्सव इन्दौर

गुरु पूजन श्री विजयजी मेहता परिवार इंदौर

गुरु पूजन श्रीमती संजूदेवी अशोकजी तातेड़ रायपुर

उद्बोधन बालमुनि मलयप्रभसागरजी म.सा.

इन्दौर नगर में सूरि मंत्र की तीसरी पीठिका संपन्न

एक ऐतिहासिक उत्सव बना

25 दिवसीय सूरिमंत्र साधना का महामांगलिक

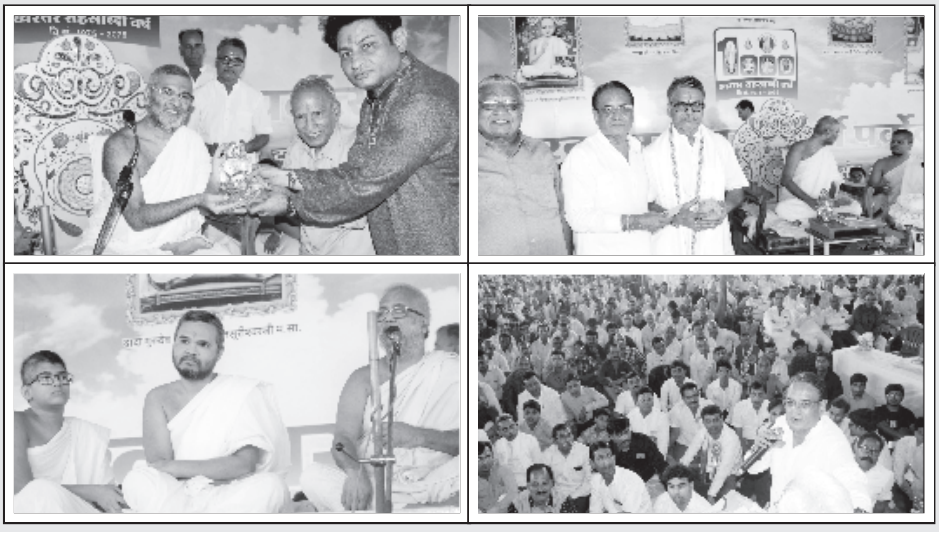

इन्दौर 28 अक्टुंबर। परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव मरुधर मणि खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने सूरिमंत्र की तृतीय पीठिका की 25 दिवसीय साधना के पश्चात् प्रथम साक्षात्कार एवं महामांगलिक में अखिल भारत वर्ष से सैंकडों गुरुभक्तों ने सम्मिलित होकर जिनशासन का जयघोष किया।

पूज्यश्री ने 4 अक्टूबर को 25 दिवसीय पीठिका साधना का प्रारंभ किया था। ता. 28 को प्रातः विशिष्ट पूजन के साथ साधना संपन्न हुई। पूज्यश्री ने पूरा समय मौन, एकान्त व आयंबिल उपवास आदि तप के साथ साधना की। ता. 28 को साधना की पूर्णाहुति के अवसर पर प्रातःकाल से प्रारंभ पूजन विधि में उपस्थित गुरुभक्तों ने अनुशासनपूर्वक विधि–विधान करते हुए आराधना के शिखर की स्पर्शना की। विधि पूर्ण होते–होते गुरुभक्तों ने गुरुवर के प्रति श्रद्धा का अपूर्व अहोभाव प्रकट कर बधाईयों की श्रेणियां समर्पित की।

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री के साथ शिष्य मंडल एवं साधना विधान के लाभार्थी श्री विजयजी रोहनजी रोहितजी रेयांसजी मेहता परिवार इन्दौर निवासी ने साधना को महोत्सव के रूप में मनाया।

साधना कक्ष के बाहर पौने नौ बजे से ही भक्तों का ज्वार उमड़ पडा। ठीक नौ बजे पूज्यश्री साधना कक्ष से बाहर पधारे। जिनमंदिर दर्शन करने के उपरान्त हजारों श्रद्धालुओं के साथ प्रवचन पाण्डाल में पधारे।

इस अवसर पर प्रवचन करते हुए पूज्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म. ने पूज्य गुरुदेवश्री के गुणों का वर्णन किया।

पूज्य बालमुनि श्री मलयप्रभसागरजी म. ने पूज्यश्री के प्रति अपना समर्पण अभिव्यक्त करते हुए कहा– आज इतने दिनों के मौन के बाद पूज्यश्री हमसे वार्तालाप करेंगे। उन्होंने पूज्यश्री की कमियों का नये तरीके से वर्णन करते हुए सकल संघ को चमत्कृत कर दिया। और स्वयं के लिए आशीर्वाद की याचना की।

समारोह का संचालन करते हुए आर्य मेहुलप्रभसागरजी म. ने सूरिमंत्र की विवेचना की। उन्होंने कहा– साधु–साध्वी पंच परमेष्ठी मंत्र जाप करते हैं। गणी, उपाध्याय, महत्तरा, प्रवर्तिनी आदि पदधारी वर्धमान विद्या की साधना करते हैं। और आचार्य सूरिमंत्र के पीठिकाओं की साधना विशिष्ट रूप से करते हैं।

उन्होंने कहा– यह मेरा सौभाग्य है जो मुझे सेवा का यह अनमोल अवसर प्राप्त हुआ है। जिसमें मुझे अपूर्व

आनंद संप्राप्त हुआ।

इस अवसर पर महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी विश्वज्योतिश्रीजी म. पू. साध्वी विरलप्रभाश्रीजी म. ने भी पूज्यश्री की साधना के लिये बधाई प्रस्तुत करते हुए उनके गुणों का वर्णन किया।

पूज्यश्री ने इस अवसर पर सूरिमंत्र की पांच पीठिकाओं की विवेचना की। उन्होंने कहा– सूरिमंत्र की पहली पीठिका बुद्धि को तीक्ष्ण करती है। दूसरी पीठिका यश का वर्धन करती है। तीसरी पीठिका वृद्धि का द्योतक है। चौथी पीठिका शक्ति और पांचवी पीठिका लब्धि का विस्तार करती है।

उन्होंने कहा– सूरिमंत्र की साधना सकल श्रीसंघ के लिये परम कल्याणकारी हो, ऐसी कामना है। 25 दिन की एकांत में साधना का अद्‌भुत आनंद मिला है। मन बाहर आना नहीं चाहता। एकांत में रमा मन बाहर नहीं आए यही जीवन की सार्थकता है। उन्होंने प्रवचन के पश्चात् महामांगलिक सुनाई। हजारों लोगों ने परम श्रद्धा और पूर्ण मौन के साथ महामांगलिक का श्रवण किया।

सूरिमंत्र साधना समारोह के लाभार्थी परिवार श्री विजयजी पुष्पाजी रोहितजी रोहनजी रेयांसजी मेहता परिवार की ओर से पूज्यश्री का गुरुपूजन किया गया।

उसके बाद सकल श्रीसंघ की ओर से रायपुर निवासी सौ. संजूदेवी अशोकजी तातेड परिवार ने गुरुपूजन का लाभ लेकर गुरुपूजन किया।

इस अवसर पर संघ के अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी सेखावत, संयोजक श्री छगनराजजी हुण्डिया, जितेन्द्रजी मालू ने भी पूज्यश्री का अभिनंदन किया।

तृतीय पीठिका विधि–विधान हेतु संजय ककरेचा एवं संगीत प्रस्तुति हेतु रत्नेशजी मेहता के साथ देवेश जैन का आगमन हुआ।

संघवी वंसराजजी भंसाली ने शंखेश्वर दादावाडी की योजना प्रस्तुत की।

बडवाह श्रीसंघ की ओर से पूज्यश्री को बडवाह पधारने की विनंती की गई।

सूरिमंत्र साधना के उपलक्ष में देश भर में सामायिक का आयोजन

28 अक्टूबर। पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. के सूरि मंत्र की तीसरी पीठिका की तप, जप व मौन पूर्वक साधना के उपलक्ष्य में पूर्णाहुति पूजन महामांगलिक के दिन ता. 28 अक्टूबर 2018 को अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के तत्वावधान में देश भर में सामायिक साधना का आयोजन किया गया।

सवा सौ से अधिक शहरों, गाँवों में सामायिक का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। देश भर में 8 हजार से अधिक सामायिक आराधना संपन्न हुई।

सामायिक आराधना करके श्रद्धालुओं ने पूज्यश्री के प्रति अपना श्रद्धा भाव व कृतज्ञता भाव प्रकट किया।

शंखेश्वर तीर्थ में धर्मशाला का उद्‌घाटन 6 जनवरी को

सुविख्यात तीर्थ श्री शंखेश्वर में पूजनीया प्रखर व्याख्यात्री श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से संस्थापित श्री शंखेश्वर जिनकुशलसूरि दादावाडी संस्थान के तत्वावधान में नवनिर्मित सुविधायुक्त 48 कमरों की धर्मशाला का उद्‌घाटन दिनांक 6 जनवरी 2019 को होने जा रहा है।

जोधपुरी पत्थर की साज–सज्जा के साथ निर्मित धर्मशाला में मनोरम्य उद्यान, स्वागत कक्ष, पाथवे आदि के साथ पार्किंग की व्यवस्थित सुविधा रखी गई है। इस अवसर सभी पुण्यशालियों से पधारने का सादर निवेदन है। एवं तीर्थ संकुल के संचालन में अपना योगदान अवश्य अर्पण करें।

अश्रुओं का निर्मल जल

(शेष पृष्ठ 17 का)

विविध संदर्भो में आँसूओं को अभिव्यक्ति दी जा सकती है-

माँ की ममता के आँसू!
बहिन के स्नेह के आँसू!
भाई के प्रेम के आँसू!
पिता के वात्सल्य के आँसू!
पत्नी के समर्पण के आँसू!
संत की करूणा के आँसू!
भक्त के श्रद्धा के आँसू!
नेता की स्वार्थ के आँसू!
मित्र की मैत्री के आँसू!
भगवान के कल्याण के आँसू!
स्वजन के सद्भावना के आँसू!

ममता के आँसू- माँ दुनिया की वह सर्वश्रेष्ठ रचना है, जो पुत्र की खुशी में भी रोती है और गम में भी रोती है। संतान मिले तो हर्ष की धारा और वियोग हो तो दु:ख का प्रवाह! पुत्र की हर उपलब्धि पर सबसे पहले, सबसे जल्दी और सर्वाधिक भावुक एक मात्र माँ ही होती है। उसके आँसूओं का मूल्यांकन करने में कोई शक्ति समर्थ नहीं।

इतिहास के पन्नों पर बहुत सारे प्रसंग आँसूओं के रंगों से लिखे गये हैं।

इस अवसर्पिणी के मध्य काल में ऋषभ कुमार के गृहत्यागी बनने के बाद माता मरूदेवी पुत्र के वियोग में आँसू बहाती हुई अंधत्व को प्राप्त हो गयी थी।

ममता के इन आँसूओं की भाँति भगवान महावीर की प्रथम माता देवानंदा बाह्मणी ने जब पहली बार तीर्थंकर वर्धमान के दर्शन किये तो उसके उर प्रदेशों से दुग्ध-धारा एवं नयनों से अश्रुधारा प्रवाहित हो चली।

राम-लक्ष्मण के वनवास से सकुशल लौटने पर माँ कौशल्या, कैकयी और सुमित्रा के आँसू सर्वविदित हैं।

वियोग के आँसू-दुनिया में सर्वाधिक वियोग के ही आँसू बहते है। राम-लक्ष्मण-सीता एवं पाँच पाण्डवों के वनवास गमन के समय हजारों आँखों से बहते वियोग के अश्रुओं की कल्पना से मन-मानस अभिभूत हो उठता है।

आदिनाथ के निर्वाण-काल में भरत चक्री द्वारा किया गया कल्पांत मार्मिक रूदन पेड-पौधों को भी भावुक करने वाला था।

गणधर गौतम स्वामी का वीर-निर्वाण अवसर पर किया गया रूदन अपने आराध्य के प्रति समर्पण एवं श्रद्धा को अभित्यक्त करने के साथ विरह व्यथा को इंगित करता है। अपने भ्राता महावीर प्रभु के महाप्रयाण-निर्वाण के समय भ्राता नंदीवर्धन मूर्च्छित हो गये थे।

प्रभु वीर पर यद्यपि गोशालक की तेजोलेश्या का प्रभाव नहीं हुआ, तथापि छह माह में उनके अकल्पित प्रयाण की मिथ्या वार्ता से मेंढियग्राम में तप-रत सिंह अणगार के आँसू तब रूके, जब भगवान ने शिष्यों द्वारा उन्हें बुलावाया और भविष्य की यथार्थता क विवरण बताते हुए कहा- मुनि सिंह! मैं अभी सोलह वर्षों तक सुहस्ती की तरह इस धरा पर विचरण करुंगा।

पश्चात्ताप के आँसू-गलत कार्य होने के पश्चात् सरल हृदय में पश्चात्ताप की भावनाएँ तरंगित होती है।

अतिमुक्तक द्वारा नदी में नाव तिराने का, मृगावती द्वारा गुरुमैया भगवती के दिल दुखाने का, चण्डकौशिक द्वारा दृष्टि-विष द्वारा जीवों को मारने का जब पश्चात्ताप हुआ, तब संताप की अश्रु-धारा में मन की सारी मलिनता धुल गयी।

कृतज्ञता के आँसू-उपकारी के उपकारों की स्मृति से प्रकट आँसू कृतज्ञता के अमृत से सिंचित होते हैं।

शत्रुंजयस्थ सवासोमा (खरतरवसही) की टुंक की नींव में कृतज्ञता का शिलान्यास है। मात्र कृतज्ञता गुण के कारण जीव में शिवत्व साकार हो उठता है। कृतज्ञतामिश्रित प्रेम के सद्गुण से ही साधर्मिक भ्राता के आँसूओं को मोती से भी मूल्यवान् माना जाता है।

श्रद्धा के अश्रु-चंदनबाला के आँसूओं ने तपस्वी भगवान श्रमण श्रेष्ठ महावीर के कदमों को लौटने के लिये मजबूर कर दिया। श्रद्धाश्रुओं की ऐसी दिव्यता जो शैतान को संत और संत को भगवंत बना देती है।

करूणा के अश्रु- छह माह तक प्राणान्तक उपसर्ग

करने वाला संगम देव साधना के सुमेरू वर्धमान महावीर को हिला न पाया। हाथ जोड़कर जब प्रत्यावर्तित होने लगा, तब परमात्मा महावीर किंचित् संवेदनशील हो उठे।

अरे! मुझे कष्ट देकर संगम मेरी कर्मनिर्जरा में सहयोगी बना है पर इन दारूण कर्मों का परिणाम ये स्वयं कैसे सह पायेगा, सोचते हुए उनकी आँखें भर आयी और पलकें नम हो गयी।

करूणा के अश्रुओं का यह उदाहरण सारे संसार में सर्वश्रेष्ठ है क्योंकि अपकार की सारी सरहदों को पार करके संगम ने परमात्मा महावीर को साधना से विचलित करने की घृष्टता की थी पर अपकारी पर उपकार और करूणा के अश्रुओं का दान वीर वर्धमान प्रभु की आन्तरिक समता को ही नहीं अपितु उनके करूणार्द्र हृदय को भी अभिव्यंजित करता है।

दुःख के अश्रु-आधि-व्याधि और उपाधि में आर्त्तध्यान का शिकार प्राणी दुःख का नीर नयनों से गिराता हुआ प्रार्थना करता है कि यह स्थिति कभी न मिले!

गरीब निर्धनता में दुःख के आँसू बहता है और धनवान् धन के लूट जाने के कारण पीड़ा का जल बहाता है।

दुःख के आँसू कहाँ नहीं है? तिर्यंच गति के प्राणियों की बात सामान्य है क्योंकि महाशक्तिशाली मिथ्यात्वी देव भी मृत्यु के समय खिन्न हो जाते हैं।

सान्त्वना के अश्रु-दुःखी जीव के दुःख में पीडित होने पर नयन-जल-धारा को सान्त्वना के अश्रु कहा जाता है।

यद्यपि अश्रुओं के हजारों प्रकार हो सकते हैं, तथापि उनके सकल इतिहास को लिखना संभव नहीं है। अश्रुओं का विराट् संसार संवेदनशील, स्निग्ध, कोमल और करूणापूरित हृदय की यथार्थ अभिव्यक्ति दे सकता है, बशर्ते निर्मल अश्रुओं के सागर की गहराई में दिखावे का कीचड़ न हो।

सूरिमंत्र की तृतीय पीठिका का पावन अवसर

अभिनंदन गीतिका

(तर्ज-भला किसी का...)

मंगलकारी घडियाँ आई, गूंज उठी मन शहनाई!
देता आज बधाई गुरुवर, देता आज बधाई ।।
सुरभित कलियाँ अभिनव गलियाँ, मधुमय मौसम आज बड़ा।
सूरिमंत्र की साधना पूरण, भक्तों का मेला उमड़ा।
तन-मन से है रिमझिम रिमझिम बरसे सावन सुखदायी!
देता आज बधाई गुरुवर, देता आज बधाई।।1।।
दूर भले ही आज आप से, भावों से हैं पास सदा!
अरदास मनित की एक यही है, अब ना करना दूर कदा!!
यादों में हे गुरुवर तेरी, अखियाँ मेरी भर आई!!
देता आज बधाई गुरुवर, देता आज बधाई ।।2।।
हम हैं बालक चरण शरण में, प्रेम हृदय का बरसाना!
सूना सूना जीवन उपवन, आकर जल्दी सरसाना!!
गुरु ही मैया गुरु ही नैया, गोद गुरु की गुणदायी!
देता आज बधाई गुरुवर, देता आज बधाई! ।।3।।

मुनि मनितप्रभसागर

धारावाहिक कथा

अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज साध्वी विद्युत्प्रभा

(गतांक से आगे)

देवी को चढाने के लिये विविध भोग सामग्री से संपूर्ण मंदिर परिसर महक उठा था। राज्य का यह विशाल एवं सुरम्य मंदिर शाही परिवार के साथ संपूर्ण पूजा का श्रद्धाकेन्द्र था। राज परिवार सहित सारी प्रजा अपने किसी भी संकट की समाप्ति के लिये इसी मंदिर में आकर मां चामुण्डा से प्रार्थना करती थी। मां चामुण्डा राज परिवार की कुलदेवी के साथ ही राज्य देवी भी थी।

राजा विमलयश अपनी कुल परम्परा से ही यह सुनते आये थे कि जब भी राज्यकुल या परिवार पर खतरे के बादल मंडराते है तो मां चामुण्डा ही रक्षा करती है। राजा ने सोचा वंश समाप्ति से बड़ी और क्या विपदा हो सकती है। अगर मेरा आंगन राजकुमार की किलकारी से नही गूंजता है तो यह राजकुल मेरे साथ ही समाप्त हो जायेगा जब कुल परम्परा ही नही बचेगी तो कुलदेवी की पूजा कौन करेगा और वह कुलदेवी भी किसकी रक्षा करेगी? यही सोचकर राजा बिमलयश ने महामंत्री सुबुद्धि से मंत्रणा करके मां चामुण्डा की आराधना का निर्णय लिया था।

जब रानी को पता चला कि महाराजा साधना के लिये सरोवर के किनारे बने मंदिर में जाकर संतान प्राप्ति के लिये साधना करना चाहते हैं तो उसने भी साथ चलकर साधना का निवेदन किया।

महाराजा ने उसे बहुत समझाया कि वह अत्यंत सुकुमार हैं। साधना के लिये, कठोर संकल्प के साथ कठोर हृदय भी चाहिये। भूख प्यास मौसम की प्रतिकूलता वातावरण की नीरवता वह सह नही सकेगी, पर उसने कहा-वह क्षत्राणी हैं? कोमल फूलों की शयन पर वह जितना सुकून महसूस करती है युद्ध मैदान में कठोर बाणों को भी वह उतनी ही सेहजता से चला सकती हैं। जब संतान दोनों को चाहिये तो मां का आशीर्वाद पाने के लिये स्वामी अकेले क्यों पुरुषार्थ करें।

सम्राट को रानी के सार्थक तर्क के सामने झूकना पड़ा और राजगुरु द्वारा प्रदत्त शुभ मुहूर्त में दोनों पति पत्नी शुद्ध आराधना के वस्त्र धारण कर मंदिर में पहुंच गये।

मंदिर परिसर में बिराजमान कुलदेवी मां चामुंडा की मूर्ति, अपने बच्चों को देखकर वात्सल्य से जैसे मुस्कुरा पड़ी।

दोनों पति पत्नी ने मां के सामने अत्यंत श्रद्धा से माथा-नमाकर कहाँ-मां! आपके कुल को बचाने की प्रार्थना लेकर हम आपके दोनों बच्चे उपस्थित हुए हैं। आपको अपने भक्तों की लाज रखनी हैं। हम तो तेरे सामने बालक हैं। न साधना की विधि जानते हैं और न भक्ति की रीति। बस...। मात्र तेरा विश्वास ही हमारा ज्ञान और पूजा हैं। मां! हमारे विश्वास की लाज रखना। तू मां है और मां अपने बच्चों पर मात्र वात्सल्य ही लूटाती है।

मां! तेरे भक्त का वंश डुब रहा है। उसे बचाने के लिये एक कुलदीपक की जरूरत है। मां तेरे इस बालक के आंगन में एक दीप जला दे! मां मैं यह संकल्प लेकर आया हूँ कि तेरा आशीर्वाद पाकर ही इस परिसर से बाहर जाऊंगा। अपने भक्त के संकल्प की रक्षा का भार तेरे हाथों में हैं।

दोनों ने भूमि शुद्धि करके उस पर ऊनी आसन बिछाये और आवश्यक दूरी बनाकर दोनों जाप में स्थिर हो गये। जाप में बैठने से पूर्व उन्होंने मां की पूजा अर्चना की। महंगी पर शुद्ध भोग सामग्री चढायी। चंदन एवं सुगन्धित फूलों से मां की मोहक अंगरचना की।

उछल कूद में माहिर मन ने प्रारम्भ में तो एकाग्र होने से इंकार कर दिया पर राजा चूंकि विद्धान था अत: वह मन के करतब को खूब अच्छी तरह समझता था। उनके विवेक के चाबुक से मन को नियंत्रित करते हुए मन को मां के चरणों में एकाग्र कर दिया। बिचारा मन कब तक अपनी मुराद् चलाता? उसने जब देखा कि चेतना मन पर हावी हो रही हैं तो

शरणागति स्वीकार करने में ही भलाई समझी। वह शांत होकर चुपचाप एक कोने में दुबक गया।

आत्मा, इन्द्रिय एवं मन की मालकिन हो गयी। उसने अपनी सारी ऊर्जा, संकल्प की पूर्णता में नियोजित कर दी।

राजा के रोम-रोम से मात्र अब मां का ध्यान टपक रहा था। उसकी चेतना का तार मां चामुंड़ा से जुडने लगा। ज्योंहि तार जुडा आनंदमग्न अनेकों देव गणों से घिरी मां चौकी। उसका सिंहासन भी जैसे डोलने लगा। उसका मन सामने चल रहे देवी नृत्य से उचाट हो गया। अवधिज्ञान का प्रयोग करके उसने अपने आसन कंपायमान का कारण जानना चाहा। अपने परम भक्त राजा को सपत्नीक जब आराधना में लीन देखा तो उसकी गुलाबी होठों की पंखुड़िया मुस्कुरा उठी।

ओ.....! आखिर आज उसे वंश विस्तार की चिन्ता यहाँ खींच ही लायी। वीतराग प्रभु का परम उपासक यह श्रावक अपने लिये पुत्र की कामना भगवान के सामने तो कर नही सकता। इसके लिये तो उसे कुलदेवी के सामने ही निवेदन करना होगा। इसका निर्णय कितना व्यवहारिक एवं औचित्यपूर्ण हैं। इसने स्वयं को मेरे सुपूर्द कर राहत का अनुभव कर लिया हैं। अब समस्या का समाधान करने की जिम्मेदारी मुझ पर आ रही हैं।

भक्ति मार्ग इसीलिये तो सरल भी हैं, और कठिन भी, सरल इसलिये कि अपनी समस्त समस्याएं अपने आराध्य के चरणों में चढ़ा लो और स्वयं भारमुक्त हो जाओं। कठिन इसलिये कि मानवीय मन संपूर्णता से समर्पित नहीं होना चाहता। वह हाथ पॉव हिलाये बिना रह नही सकता।

जब चामुंडा ने अवधिज्ञान का प्रयोग करके महाराजा का भाग्य पढ़ा, तो उसके चेहरे पर अनायास ही पीड़ा के चिन्ह झलक आये! अरे यह कैसी विचित्र नियति हैं, राजा के भाग्य की? वह पुत्रवान होकर भी पुत्र से खुशियॉ नही पा सकेगा। उसके भाग्य में पुत्र के कारण सुख कम और दुख ही ज्यादा रहेगा, पर भाग्य को बदला भी तो नहीं जा सकता? अतीत का पुरुषार्थ वर्तमान का निर्माता बनता हैं।

राजा ने अपने ही व्यवहार और क्रियाओं से ऐसे कर्म बांधे है, जिस कारण वह सब कुछ पाकर भी वंचना ही भोगेगा। में उसकी एवं उसके कूल की रक्षिका होकर भी उसके जीवन की भाग्य रेखाओं में भरे मटमेले रंगो को धो नहीं सकती। खैर जैसा उसका भाग्य। मुझे पुकारा है, तो अपना कर्तव्य निर्वाह करते हुए उसके भाग्य पर छाये पुत्र प्राप्ति के आवरण को मिटाने का निमित्त बनना ही पड़ेगा। माँ चामुण्डा अपने अत्यन्त निजी सेवक के साथ अलौकिक प्रकाश फैलाती हुई मंदिर में आकाशमार्ग से अवतरित हो गयी।

पल भर में तो मूर्ति के चारों और दिव्य आलोक फैल गया। राजा को लगा-मंदिर में चारों और नुपूर ध्वनि हो रही हैं, दिव्य सुगन्ध से उसके नथुने भर गये है। अलौकिक वातावरण से पुरा परिसर जगमगा उठा हैं।

मूर्ति के होठ धीरे-धीरे खुले। राजा ने सुना-पुत्र! उठो। तुम्हारी साधना से मैं प्रसन्न हुई हूँ। मैं जानती हूँ, तुम पुत्र, प्राप्ति की आशा संजोये इस दरबार में आये हो। तुम चिंता मत करो। तुम्हारा वंश लम्बा चलेगा, बस इसके आगे कोई प्रश्न नही, और आवाज आते-2 अचानक ही जैसे सन्नाटा छा गया।

(क्रमशः)

सादर श्रद्धांजली

तिरूपातूर निवासी धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री गौतमचंदजी कवाड का ता. 30 अक्टूबर 2018 को स्वर्गवास हो गया। वे अत्यन्त धार्मिक स्वभाव के आगेवान श्रावक थे। श्री कवाडजी पिछले दो वर्षों से केन्सर की व्याधि से ग्रस्त थे। अत्यन्त पीड़ाकारी इस व्याधि में उनकी समता, सहनशीलता, धर्मपूर्ण भावना अत्यन्त अनुमोदनीय थी।

केन्सर की खतरनाक पीडा को वे पूर्ण समाधि के साथ समता भावों से भोग रहे थे। हर समय नवकार महामंत्र व दादा गुरुदेव उनके हृदय में बिराजमान रहे। आत्म भावों में उनकी रमणता अत्यन्त अनुमोदनीय थी।

ऐसे धर्मनिष्ठ श्रावक के स्वर्गवास से शासन व गच्छ में बहुत बडी क्षति हुई है। जहाज मंदिर परिवार उन्हें भाव पूर्ण श्रद्धांजली अर्पण करता है।

श्रद्धासुमन

शासन रत्न: श्री गौतम जी कवाड़

मुनि मनितप्रभसागर

दोपहर के दो बज रहे थे। दूरवाणी द्वारा लीला के समाचार मिले कि काकोसा नही रहे।

मैं सोचने लगा–अहो! कर्म की गति कितनी विचित्र है। गौतमचंदजी कवाड़ जिन्हें धर्म के प्रति अपार श्रद्धा, प्रेम और अपनत्व का भाव था, उन्हें कैंसर की असाध्य बीमारी ने आकर घेर लिया।

बीकानेर चातुर्मास में जब वे दर्शनार्थ आये थे, तब कहाँ सोचा था कि अब वे कभी भी नहीं मिल पायेंगे।

उनकी रगों में रक्त के साथ जिनशासन में आस्था–भाव प्रवाहित होता था, उनकी आँखों में जिनेश्वर परमात्मा की भक्ति का नूर छलकता था, उनकी क्रिया में जिनाज्ञा का अमृत बहता था।

होठों पर भक्ति, हृदय में दया, हाथों में दान, तन में तप और शब्दों में जिनवाणी, ऐसे अद्‌भुत व्यक्तित्व के धनी थे–श्रावक प्रवर श्री गौतमचन्दजी कवाड़।

उनका परिचय बहुत पुराना है। पूरे कवाड़ परिवार मे पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति पूर्ण श्रद्धा का भाव है, अत: उनका प्रतिवर्ष दर्शनार्थ कम से कम एक बार तो आना होता ही था।

उनको निकटता से देखने का मौका दो अवसरों पर मिला–पहले तो तिरूपात्तुर में महिने भर के प्रवास काल में और दूसरा तेनम्पट की प्रतिष्ठा–अंजनशलाका के महोत्सव में।

तेनम्पट्ट में लगभग दो हजार वर्ष प्राचीन प्रतिमा एक वृक्ष के नीचे वर्षों से पूजी जा रही थी, उसका उद्धार करके उन्होंने तीर्थ का स्वरूप दिया। तेनम्पट्ट की जैनेतर तमिल बालिकाओं को उन्होंने इस तरह तैयार किया कि उन्हें चैत्यवंदन, स्नात्रपूजा, पंचकल्याणक पूजा के साथ-साथ आरती, मंगल दीपक भी कण्ठस्थ हो चुके हैं।

तिरूपात्तुर जैन संघ के स्तंभ कहे या कवाड परिवार के बेशकीमती कोहिनूर कहे। खरतरगच्छ के श्रावक रत्न कहे या जिनशासन के वफादार सुश्रावक कहे। कुछ भी समझ में नहीं आता। उनके स्वर्गगमन से संघ, गच्छ और शासन में अपूरणीय क्षति हुई है। पिछले साल भर से वे कैंसर की व्याधि से ग्रस्त थे पर अपार वेदना में भी उनकी समाधि भी अपार थी। उनका प्राय: सारा समय धर्म–श्रवण में ही बीतता था।

उन्होंने जीवन भर जो तैयारी की, उसकी परीक्षा में पूर्णांक से उत्तीर्ण हुए। यद्यपि उनका बिछोह हर शासन प्रेमी के लिये दु:ख का विषय है, फिर भी कर्म राजा को मात देकर समाधि मरण की प्राप्ति से मौत को मातम का नहीं, महोत्सव का रूप दिया। निश्चित ही उन्होंने सद्‌गति की प्राप्ति की होगी।

बिना पटाखों के दीपावली
मूक बधिर जीवों को अभयदान

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त पूज्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा की प्रेरणा से अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद्, केन्द्रीय समिति एवं समस्त शाखाओं के सदस्यों की ओर से इस बार की दीपावली बिना पटाखों के मनाई जाएगी एवं इसका संदेश पूरे देश में जन–जन तक पहुँचाया गया।

बिना पटाखों के दीपावली के पोस्टर का विमोचन गुरुदेवश्री के द्वारा विगत दिनों इन्दौर में केन्द्रीय समिति के पदाधिकारियों की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर युवा परिषद् के राष्ट्रीय चेयरमेन पदम बरडिया, अध्यक्ष सुरेश लूणिया, सहमंत्री ललित डाकलिया, कोषाध्यक्ष राजीव खजांची एवं मध्य प्रदेशाध्यक्ष दिनेश हुंडिया आदि उपस्थित थे। इस हेतु सभी से निवेदन किया गया कि दीपावली में पटाखों का उपयोग नहीं करके देश के पर्यावरण की रक्षा, असंख्य स्थावर एवं त्रस जीवों को अभयदान एवं उनकी रक्षा के साथ मेहनत से कमाई गए धन को इस तरह बर्बाद ना करें।

प्रेरक कहानी

एक छोटी सी कहानी

प्रस्तुति : कैलाश बी. संखलेचा

एक बिल्डर के अधीन एक कारीगर काम करता था। कारीगर की उम्र ज्यादा हो गयी थी तो वो बिल्डर के पास पहुँचा और बोला कि बॉस अब मुझे रिटायरमेन्ट लेना हैं। अब मैं काम नहीं कर पाउंगा, आप मुझे फ्री कर दो, मैं घर जाकर बच्चों के साथ टाइम बिताना चाहता हूँ, बहुत काम कर लिया।

बिल्डर ने कहा कि ठीक है तुम जाओ लेकिन एक प्रोजेक्ट अटक रहा है, एक और मकान बना के चले जाओ। बस उसके बाद तुम जैसा चाहोगे वैसा रिटायरमेन्ट मिलेगा।

अब कारीगर ने सोचा कि बॉस जाते हुए भी एक और मकान बनवा रहा है। मतलब बॉस तो बॉस होता है।

कारीगर ने कहा ठीक है मैं करता हूँ। कारीगर गया और मकान बनाने लगा।

बे–मन से उसने 3–4 महीनों में मकान बनाकर तैयार कर दिया। मतलब बिलकुल बे–मन से। उसे लगता था कि क्यों जाते हुए भी एक और काम करूँ।

3–4 महीने बाद वह फिर पहुँचा बॉस के पास और बोला सर वो मकान जो आपने बनाने के लिए कहा था वो मकान मैंने बना दिया आप चलकर एक बार देख लो कैसा, क्या हैं ?

बिल्डर और कारीगर दोनों पहुँचे। जहाँ मकान बना था उससे थोड़ा सा दूर जाकर खड़े हो गए। बिल्डर ने वो मकान का निरीक्षण करते पाया कि आड़ा–टेढ़ा, बड़ा अज़ीब सा मकान बनाया है इस कारीगर ने, अब तक जितने मकान बनाये शानदार बनाये, लोग तारीफ करते थे।

बिल्डर ने उस कारीगर को मकान की चाबी अर्पण करते हुए कहा कि ये मकान मैं तुम्हारे लिए ही बनवा रहा था।

अब कारीगर को समझ नहीं आ रहा था कि ये क्या हो गया! अगर उसे मालूम होता कि वो मकान खुद के लिए बना रहा है तो शानदार मकान बनाता।

उसने आज तक इतने सारे शानदार मकान बनाए, लेकिन उसे स्वयं के मकान की बात मालूम नहीं थी इसलिए उसने बे–मन से आड़ा टेढ़ा, अज़ीब सा जल्दी से मकान बना के खत्म कर दिया। कहानी तो खत्म हो गयी है। लेकिन आपकी जिन्दगी में भी यही हो रहा है।

आप रोजाना एक ईंट उसके ऊपर दूसरी ईंट, इस तरह अपना मकान अर्थात् अपना फ्यूचर बना रहे हो।

लेकिन आप भूलते जा रहे हैं कि वो आप ही का फ्यूचर है।

बे–मन से काम करना बंद कीजिये, प्यार से काम कीजिए और काम से प्यार कीजिए।

आखिर में मैं आपसे यही कहना चाह रहा हूँ कि

कर दिखाइये कुछ ऐसा,
कि दुनियाँ करना चाहे आपके जैसा।

मेरी तरफ से आपको बहुत–बहुत शुभकामनाएं...।

दिल्ली में सरस्वती जाप

दिल्ली 10 नवंबर। राजधानी दिल्ली में पूज्या साध्वी सौम्यगुणाश्रीजी म० आदि ठाणा 4 के सानिध्य में 10 नवंबर 2018 से दिनांक 12 नवंबर 2018 तक जैन बाल आश्रम, महावीर वाटिका के सामने, दरियागंज, नई दिल्ली में होगा। जिसमें डेढ़ डेढ़ घंटे के चरणों में जाप करवाए जाएंगे।

यह आयोजन श्री जैन खरतरगच्छ समाज(पंजी०) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली के तत्वावधान में हो रहा है।

–मनीष नाहटा

समाचार दर्शन

केयुप बाड़मेर का पुनर्गठन

बाडमेर 21/10/2018। कुशल कान्ति मणि प्रवचन वाटिका, कोटड़िया–नाहटा ग्राउंड में पू. मुनिप्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म. की निश्रा व पू.साध्वीवर्या सौम्यगुणाश्रीजी म. की प्रेरणा से अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेशजी लूणिया, राजस्थान पश्चिम क्षेत्र के प्रदेशाध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमजी सेठिया, श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ बाड़मेर के शंकरलालजी धारीवाल, द्वारकादासजी डोसी, रतनलालजी संखलेचा, अहमदाबाद के परम गुरुभक्त भेरूजी लूणिया, केयुप अहमदाबाद अध्यक्ष रतनलालजी बोथरा, केयुप धोरीमन्ना अध्यक्ष राजेंद्र सेठिया, जगदीशजी मालू, पारसजी मालू, जगदीशजी नाहटा, मुकेशजी संखलेचा, भरतजी संखलेचा, रूपेशजी संखलेचा, केवलजी एम. नाहटा, संजयजी लूणिया, विपुलजी बोथरा, संजयजी गांधी, महावीरजी लूणिया, सुनीलजी बोथरा सहित युवा श्रावक उपस्थित थे।

मुनिश्री मनितप्रभसागरजी महाराज ने अपने मुखारविंद से कार्यकारिणी की घोषणा की, जिसमें प्रकाशजी पारख को अध्यक्ष, वरिष्ठ उपाध्यक्ष गौतमजी संखलेचा सांख, उपाध्यक्ष नरेशजी लूणिया, महामंत्री केवलजी छाजेड़, सह–मंत्री अनिलजी मेहता व मुरलीधरजी संखलेचा, कोषाध्यक्ष मदनजी मेहता, सह–कोषाध्यक्ष कपिलजी लूणिया, प्रसार–प्रचार कपिलजी मालू व लूणजी नाहटा, स्वाध्याय प्रकोष्ठ राजूजी वडेरा व ललितजी मालू, सदस्य पवनजी संखलेचा, रमेशजी मालू कानासर, रमेशजी मालू अगडावा, रमेशजी बोथरा, भूरजी छाजेड़, भरतजी छाजेड़, अशोकजी बोहरा, सलाहकार सम्पतजी बोथरा, अशोकजी धारीवाल, गौतमजी भूरचंदजी बोथरा, सुरेशजी बोथरा, गौतमजी चमन, गौतमजी बोथरा स्टार की नियुक्ति की गई।

गुवाहाटी में चातुर्मास का रंग

गुवाहाटी 16 अक्टूबर। जैन श्वेतांबर मंदिरमार्गी संघ एवं चातुर्मास व्यवस्था समिति के तत्वावधान में पू.गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी एवं पू. गणिनी पद विभूषिता गुरुवर्या सुलोचनाश्रीजी म.सा., पू. तपोरत्ना सुलक्षणाश्रीजी म. की चरणाश्रिता पू. समतामूर्ति प्रियस्मिताश्रीजी म., पू. डॉ प्रियलताश्रीजी म., पू. डॉ. प्रियवंदनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 की पावन निश्रा में शाश्वत नवपद ओली की आराधना ता. 16 अक्टूबर से प्रारंभ हुई जिसमें अनेक तपस्वियों ने तपस्या की। शाश्वत ओली कराने के लाभार्थी श्री गुलाबचंदजी नरेशकुमारजी कोठारी परिवार रहे।

आसाम की राजधानी, ऐतिहासिक नगरी गुवाहाटी में प्रथम बार हो रहे चातुर्मास में व्यवस्था सहयोगी अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद गुवाहाटी शाखा एवं खरतरगच्छ महिला परिषद गुवाहाटी रहे।

विविध तपस्या एवं जिनभक्ति महोत्सव के अंतर्गत पंचाह्निका महोत्सव ता. 20 से 24 अक्टूबर मनाया गया। जिसमें ता. 20 को श्री जयतिहुअण महापूजन, ता. 21 को सरस्वती महापूजन, ता. 22 को लब्धिनिधान गौतम स्वामी महापूजन, ता. 23 को अठारह अभिषेक महापूजन, ता. 24 को दादागुरुदेव महापूजन आयोजित किए गए।

वडोदरा में भक्तामर विधान

वडोदरा 6 अक्टुबर। वड़ोदरा खरतरगच्छ श्री संघ में महान चमत्कारिक श्री भक्तामर स्तोत्र अभिषेक विधान अंतर्गत 27–28वीं गाथा का अद्भुत विधान संपन्न हुआ है।

विधान के लाभार्थी अल्पेश मोतीचंदजी झाबक एवं राजेश जेठमलजी झाबक परिवार ने अभिषेक करके खूब सुन्दर लाभ लिया। विधान में पूजनीया साध्वीवर्या मृगावतीश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा संप्राप्त हुई।

जीवराशि क्षमापना

रत्न प्रसूता फलोदी नगरी में प.पू. बहिन म.साध्वी श्री डॉ. विद्युत्प्रभा श्री जी म.सा. की पावन निश्रा में पू. पिता श्री रतनचंदजी बच्छावत की पूण्य स्मृति एवं मातु श्री निर्मला देवी बच्छावत के जीवराशि क्षमापना के निमित्त त्रिदिवसीय महोत्सव का भव्य आयोजन हुआ।

प्रथम दिवस प्रात: 9 बजे 'संयम उपकरण वंदनावली' का कार्यक्रम अंतराष्ट्रीय संगीत सम्राट नरेन्द्र भाई वाणीगोता द्वारा करवाया गया। प्रत्येक संयम उपकरण को भिन्न-भिन्न प्रकार के नियम-पौषध, आयंबिल, स्वाध्याय, सामायिक, माला, मौनादि को हर्ष के साथ स्वीकार करके अपने घर ले जाने हेतू लोगों में जैसे होड दौड़ मची थी। उपकरण एक और नियम लेने वाले दस-पन्द्रह एक साथ खडे हो जाते थे। यह फलोदी वासियों का 'संयम' के प्रति अद्‌भूत बहुमान झलक रहा था।

दोपहर 12.36 विजय मुहूर्त में इन्दौर से पधारे विधिकारक हेमंत भाई द्वारा प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिन मणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा रचित 'दादा गुरुदेव महापूजन' पढाया गया। जिसमें मुख्य पीठ के अलावा 11 जोड़े बैठे थे। रात्री में नरेन्द्र भाई वाणीगोता ने अपनी मधुर आवाज से परमात्म भक्ति करते हुए भक्तों के हृदय को भक्ति में सराबोर कर दिया।

द्वितीय दिवस आसोज वदि दशमी का दिन अद्‌भूत दिवस था। आज प.पू. कृष्णागिरी पीठाधिपति यतिवर्य श्री डॉ. वसंत विजय जी म.सा. ने अपनी विशिष्ट मंत्रोच्चारण शैली में 'उवसग्गहरं महापूजन' पढाया। लोग उनके मंत्रोच्चारण को सुनकर प्रशंसा के पुल बांधने लगे। आज भी 11 जोड़ो महापूजन में बैठे थे।

सन्ध्या की भक्ति आज कुछ अलग अपने आपमें विशेष थी। 'उवसग्गहरं महापूजन' के दरम्यान पू. यतिवर्य श्री डॉ. वसंत विजय जी म.सा. के द्वारा 24 तीर्थंकर परमात्मा की माताओं की वंदना अर्चना करवाई गई थी तो सन्ध्या की वेला में नरेन्द्र भाई वाणीगोता द्वारा सर्वप्रथम 'मातृ वंदनावली' का कार्यक्रम करवाया गया। आज 'माँ निर्मला देवी बच्छावत' अपने सम्पूर्ण परिवार के साथ पांडाल में प्रविष्ट हुई। परिवार के सभी सदस्यों ने अपनी उपकारी 'माता निर्मला देवी' के पांव दूध से पखाले और चावलों से बधाया। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम को नरेन्द्र भाई ने इतना भावुक कर दिया कि पांडाल में बैठे समस्त लोगों की आँखे अपनी उपकारी माता-पिता की स्मृति में भर आई। तत्पश्चात् यतिवर्य श्री डॉ. वसंत विजय जी म.सा. ने अपनी मीठी-मीठी, मधुर आवाज से लोगों को रात्रि के दो बजे तक भक्ति में बांधे रखा। यह फलोदी के इतिहास में पहला अवसर था कि भक्तगण 2 बजे तक भक्ति में बैठे रहे। लोग गुरुजी की भक्ति के दीवाने हो

गये थे।

तृतीय दिन प्रात: 9.30 बजे प.पू. बहिन म. साध्वी श्री डॉ. विद्युत् प्रभा श्रीजी म.सा. द्वारा अपनी ओजस्वी वाणी से जीव राशि क्षमायाचना का तात्पर्य समझाते हुए निर्मला देवी बच्छावत द्वारा जीवराशि क्षमायाचना करवाई। सातों क्षेत्रों में निर्मला देवी द्वारा राशि की घोषणा की गई। तत्पश्चात् परिवार के सदस्यों और संघ के द्वारा निर्मला देवी का बहुमान किया गया।

दोपहर 12.36 विजय मुहूर्त में लाल वस्त्रों को धारण किये 111 जोडों के साथ 'पार्श्व पद्मावती महापूजन' प.पू. यतिवर्य श्री डॉ. वसंत विजय जी म.सा. द्वारा पढ़ाया गया। आज पांडाल में अद्भूत भक्ति का नजारा नजर आ रहा था। छोटे-बड़े-वृद्ध सभी के पांव थिरक रहे थे। सभी भक्ति की मस्ती में झुम रहे थे।

आज दोपहर लाभार्थी परिवार निर्मला देवी रतनचंद जी बच्छावत परिवार द्वारा स्वामीवात्सल्य का आयोजन था।

आज रात्री में भी कल जैसा ही भक्ति का समा बंधा। पूर्व में नरेन्द्र भाई ने परमात्मा की भक्ति में लोगों को झुमाया तो, उतर वेला में मां पद्मावती के परम आराधक प.पू. यतिवर्य श्री डॉ. वसंत विजय म.सा. ने 'मां पद्मावती की भक्ति में भाव विभोर कर दिया। लोग नाचने-झुमने लगे। लोगों के मुंह से मात्र यही शब्द निकल रहे थे, ऐसी परमात्मा पूजा! ऐसी परमात्म भक्ति! हमनें अपनी जीवन वेला में कभी नही देखी। ऐसे अद्भूत परमात्म भक्ति के आयोजन में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते हुए लोग अपने भाग्य की सराहना कर रहे थे।

रतलाम में पंचान्हिका महोत्सव सम्पन्न

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ श्री संघ (ट्रस्ट) रतलाम के तत्वावधान में परम पूज्या छत्तीसगढ रत्न शिरोमणी गुरुवर्या श्री मनोहर श्रीजी म.सा. की 13 वीं पुण्य तिथि के निमत्त प.पू. श्री संघमित्रा श्रीजी म.सा. एवं प.पू. श्री अमीझरा श्रीजी म.सा. की पावन निश्रा मे प्रख्यात विधिकारक श्री दीपक भाई गुरुजी एवं संगीतज्ञ श्री किशोर भाई (कच्छ-भुज) के कुशल मार्गदर्शन में भव्य पंचान्हिका महोत्सव के प्रथम दिवस श्री पार्श्व पद्मावती महापूजन बड़े भावोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। महापूजन के लाभार्थी श्री सुभाषजी मंजुलादेवी जैन ने श्री दीपक भाई, किशोर भाई एवं सभी सहायकों का भाव-भीना बहुमान किया। द्वितीय-तृतीय चतुर्थ दिवस में त्रिदिवसीय विशिष्ट मंगलकारी श्री अर्हद् महापूजन संगीतमय स्त्रोत के साथ श्री संघ के सभी श्रावक-श्राविकाओं ने सामूहिक रूप से बड़े भावोल्लास के समान्न की गई। कुंभ कलश, नवग्रह पाटला पूजन, क्षैत्रपाल देव, षोडस विद्यादेवी पूजन के साथ हवन एवं 1100 औषधि युक्त जल से जिनेश्वर परमात्मा के 108 महाभिषेक विधि-विधान से सम्पन्न हुए। पंचम दिवस शरद पूर्णिमा के दिन चारों दादा गुरुदेव की संगीतमय महापूजन श्री आदि नाथ जैन श्वेता. बाबा सा. मंदिर स्थित श्री जिनकुशल सूरी दादावाड़ी में धूमधाम से सम्पन्न हुई। पूजन के लाभार्थी श्री प्रकाशचन्दजी प्रतीकजी डोसी (C.A.) परिवार द्वारा श्री दीपक भाई, किशोर भाई का हार्दिक बहुमान कर प्रभावना वितरित की गई। प.पू. श्री संघमित्रा श्रीजी म.सा. के आशीर्वाद व सदप्रेरणा से श्री संघ मे ज्ञान वाटिका धार्मिक पाठशाला का शुभारंभ हुआ। पू. म.सा. ने मार्मिक उद्बोधन में कहा कि बच्चों को धार्मिक पाठशाला में अवश्य भेजे जहाँ स्वधर्म के ज्ञान के साथ बच्चों को सुसंस्कारों में दीक्षित किया जाता है। श्री संघ अध्यक्ष मनोहर छाजेड़ सहित ट्रस्ट मंडल व युवा संघ अध्यक्ष जितेन्द्र चोपड़ा ने अतिथियों का अभिनंदन व सचिव श्री हेमन्त बोथरा ने सभी आगन्तुकों व कार्यकर्त्ताओं के प्रति हार्दिक आभार माना।

केयुप लोहावट का गठन

लोहावट 20 अक्टूबर। अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की लोहावट शाखा का गठन हुआ। युवा परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेशजी लुनिया, फलोदी शाखा के अध्यक्ष श्रीमान् ललितजी बच्छावत एवं रवींद्र नाहटा, जितेंद्रजी बच्छावत मौजूद रहे।

जिसमें अध्यक्ष वल्लभजी पारख, सचिव विनयजी पारख, कोषाध्यक्ष पीयूषजी पारख, उपाध्यक्ष महेशजी पारख, उपाध्यक्ष श्री पालजी पारख, प्रचार प्रसार एवं मीडिया प्रभारी विनयजी गोलेछा, सहमंत्री संतोष जी पारख, सहकोषाध्यक्ष जितेंद्रजी टाटिया, सलाहकार के रूप में श्री किशनलालजी पारख, श्री गौतमजी पारख, श्री छोटमलजी भंसाली, श्री किशोरमलजी गोलेछा को शामिल किया गया।

नवनिर्वाचितों ने पू. साध्वी श्रद्धान्विताश्रीजी म. से आशीर्वाद लिया।

ब्यावर में प्रतिष्ठा 19 जनवरी को

दादा गुरूदेव की 125 वर्ष प्राचीन दादावाडी में श्री संभवनाथ जिनालय की प्रतिष्ठा 19 जनवरी 2019 को होगी। प्रतिष्ठा खरतरगच्छीय मोहनलालजी म. के समुदायवर्ती सरल स्वभावी गणाधीश पंन्यास श्री विनयकुशलमुनि जी म. आदि ठाणा एवं साध्वी विरतीयशाश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में होगी।

प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु सुरेश कांकरिया महोत्सव संयोजक एवं सहसंयोजक के रूप में चेतन हालाखण्डी, बिरदीचन्द चौपडा, बलवंत रांका, राकेश डोसी, राकेश भण्डारी को बनाया गया है। प्रतिष्ठा महोत्सव को लेकर ब्यावर खरतरगच्छ संघ में खुशियों का माहौल है। —महेन्द्र छाजेड, संघमंत्री

जैन सोशियल ग्रुप को मिला सेवा सम्मान

बाड़मेर 1 नवम्बर। कोटड़िया—नाहटा ग्राउण्ड में पू. मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म. आदि ठाणा की निश्रा में इंडिया अगेंस्ट वॉयलेंस, बाड़मेर की ओर से जैन सोशियल ग्रुप को जैन समाज बाड़मेर में बच्चों को जैन धार्मिक संस्कार शिविर सहित कई बेहतरीन समाज सेवा के कार्यों हेतु 'सेवा सम्मान' 2018 से सम्मानित किया गया।

सम्मान समारोह में इंडिया अगेंस्ट वॉयलेंस, बाड़मेर के जिला संयोजक मुकेश बोहरा 'अमन', रतनलाल संखलेचा, अशोक धारीवाल, बाबूलाल टी. बोथरा सहित गणमान्य अतिथियों द्वारा 'सेवा सम्मान' 2018 प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस दौरान जैन सोशियल ग्रुप के जोगेश छाजेड़, मोती सिंघवी, दिनेश भंसाली, सुमेर बोहरा, सुमित संखलेचा, अखिल संखलेचा, सरूप धारीवाल सहित सैंकड़ों श्रावक—श्राविकाऐं उपस्थित रहें।

बाड़मेर में चातुर्मास की आराधना

परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरि जी के सूरिमंत्र की तृतीय पीठिका की निर्विघ्न पूर्णाहूति के अवसर पर दिनांक 28.10.2018 को बाड़मेर नगर में पूज्य मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा-4 की निश्रा में और के युप के तत्त्वाधान में सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया। पूज्य मुनि श्री सामायिक की महिमा बताते हुए कहा श्रावक जीवन के चार शिक्षाव्रतों में सामायिक प्रथम स्थान पर हैं। सामायिक लेने का प्रतिज्ञा सूत्र 'करेमि भंते' है। सामायिक के बिना अरिहंत अरिहंत नहीं बन सकते, साधु साधु नहीं बर सकता। श्रावकों के लिए देशविरति सामायिक और साधु भगवंतो के लिए सर्वविरति सामायिक का आख्यान शास्त्रों में आता हैं। बाड़मेर नगर के कोटड़िया-नाहटा ग्राउंड में सामूहिक सामायिक करने वाले आराधको की संख्या 530 से अधिक थी जिनमें बच्चों ने, महिलाओं ने, बड़ो ने और बुजुर्ग ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इसी आराधना हुई जिनमें 250 की संख्या में पुरुष व महिलाओं ने भाग लिया। प्रवचन सतत 5 महिने से गतिमान है जिनमें अष्ट प्रवचन माला में से ऐषणासमिति पर व्याख्या चल रही है।

सूरि मंत्र की साधना के उपलक्ष्य में फलोदी में आयोजन

प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री मज्जिन मणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा. के सूरिमंत्र की तृतीय पीठिका की निर्विघ्न समाप्ति के लिये फलोदी जैन श्री संघ में प.पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युतप्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से 5 लाख नवकार महामंत्र का जाप एवं 28 अक्टूबर को 108 सामूहिक सामायिक एवं 55 आयंबिल सम्पन्न हुए।

खरतरगच्छ महिला परिषद बालोतरा शाखा का गठन

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री मज्जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया बहिन म. साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी डॉ. नीलांजना श्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से अखिल खरतरगच्छ महिला परिषद, बालोतरा शाखा का गठन किया गया।

साध्वी श्री की निश्रा में सौ मंजु चौपडा को अध्यक्ष, सौ. कविता बोथरा को उपाध्यक्ष, सौ. शालिनी बोथरा को मंत्री व सौ. सीमा चौपडा को कोषाध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से नियुक्त किया गया। महिला परिषद् में लगभग तीस सदस्याओं ने जुडने का सौभाग्य प्राप्त किया। खरतरगच्छ महिला परिषद् की सभी सदस्याएं पू. साध्वी श्री की निश्रा में श्रीमद् देवचंद्रजी कृत स्नात्र पूजा, वास्तुक पूजा एवं दादा गुरुदेव की पूजाए नित्यप्रति आकर सीख रही है। साथ ही साध्वी नीलांजना श्रीजी म. द्वारा गुणस्थान की तात्विक व्याख्या में श्री महिला परिषद सहित अन्य श्राविकाएं भाग ले रही है।

प्रेषक : उपाध्यक्ष पुरुषोत्तम सेठिया, बालोतरा

बालोतरा में सामुहिक सामायिक आराधना

परम पूज्य आचार्य श्रीजिन मणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा. की तृतीय पीठिका की साधना निराबाध-निर्विघ्न रूप से सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में पूजनीया बहिन म. साध्वी डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पू. साध्वी डॉ. श्री नीलांजना श्रीजी म.सा. की निश्रा में बालोतरा आराधना भवन में केयुप तथा खपम., द्वारा सामुहिक सामायिक की आराधना 28 अक्टूबर को सम्पन्न हुई। इस आराधना में श्रावक-श्राविकाओं ने बडी संख्या मे भाग लिया।

प्रात: 9.30 बजे पू. साध्वी श्री की निश्रा में केयुप खमप के सदस्य सहित सकल संघ ने सामायिक की आराधना की। सर्वप्रथम भक्तामर, गौतमस्वामी इक्तीसा, दादा गुरुदेव इकतीसा के सामुहिक पाठ के पश्चात् साध्वी द्वारा सूरिमंत्र की कठोर साधना एवं तपश्चर्या पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने गुरुमहिमा सुनाते हुए कहा कि यह हमारा परम सौभाग्य है कि पू. आचार्य श्री मणिप्रभसूरि राजस्थान सिंवाची के हीरे है, मोकलसर के रत्न है और लुंकड कुल के कोहिनूर हैं। वे सतत् अपनी ऊर्जा जिनशासन और खरतरगच्छ की प्रभावना में संपूर्णता से नियोजित कर रहे है। हमारी मंगलकामना है कि आचार्य श्री चिरायु.... चिरंजीवी हो। रजत सिक्के की प्रभावना के साथ यह कार्यक्रम उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

अभिषेक गोलेच्छा, सचिव, केयुप, बालोतरा

कंचन बाग इन्दौर में नवपद ओली

इन्दौर। नीलवर्णा जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक ट्रस्ट के तत्वावधान में साऊथ तुकोगंज स्थित कंचनबाग उपाश्रय में आयोजित चातुर्मास के अंतर्गत नवपद ओली की आराधना उल्लास के साथ परिपूर्ण हुई। परम पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के आज्ञानुवर्ति पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. एवं पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. के सान्निध्य में कंचनबाग उपाश्रय में ओली के दौरान अंतिम तीन दिन लगातार महापूजन एवं भक्ति संध्या का आयोजन हुआ।

पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. ने नवपदों की व्याख्या करते हुए श्रद्धा व समर्पण के साथ आराधना का महत्व बताकर श्रीपाल कथानक से प्रेरणा लेने की सीख दी।

प्रथम दिन श्री दादागुरुदेव महापूजन, द्वितीय दिन पार्श्व पद्मावती महापूजन, तृतीय दिन श्री सिद्धचक्र महापूजन आयोजित किया गया।

पूजन हेतु संजय ककरेचा एवं संगीत हेतु श्री रत्नेशजी मेहता का आगमन हुआ।

देपालपुर दादावाडी की प्रतिष्ठा 25 जनवरी को

परम पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में देपालपुर में चौधरी परिवार द्वारा निर्मित दादावाडी की प्रतिष्ठा 25 जनवरी 2019 को शुभ मुहूर्त्त में संपन्न होगी।

दादावाडी की प्रतिष्ठा कराने के लिये श्री सुधीरजी, चंद्रशेखरजी, कमलेशजी चौधरी परिवार देपालपुर श्रीसंघ के बडी संख्या में सदस्यों को लेकर ता. 28 अक्टूबर 2018 को सूरिमंत्र तृतीय पीठिका पूर्णाहुति के महामांगलिक अवसर पर पूज्यश्री की सेवा में पहुँचा।

उनकी विनंती को स्वीकार कर पूज्यश्री ने माघ वदि पंचमी शुक्रवार का शुभ मुहूर्त्त प्रदान किया, जिसे श्रवण कर सकल श्री संघ व चौधरी परिवार में परम हर्ष व आनंद का वातावरण छा गया। पूज्यश्री ता. 18 जनवरी को इन्दौर की सुप्रसिद्ध प्राचीन रामबाग दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न करवा कर देपालपुर पधारेंगे। वहाँ प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् उज्जैन पधारेंगे, जहाँ दीक्षा, अंजनशलाका प्रतिष्ठा समारोह होगा।

दो पुस्तकों का विमोचन

इन्दौर 28 अक्टूबर। सूरि मंत्र की तीसरी पीठिका के महामांगलिक उत्सव के पावन अवसर पर ता. 28 अक्टूबर 2018 को दो पुस्तकों का विमोचन किया गया।

पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा लिखित जटाशंकर नामक पुस्तक के चौथे संस्करण का विमोचन किया गया। इसका लाभ मुमुक्षु शुभम् लूंकड की बहिन सौ. श्रीमती शिल्पादेवी ने लिया।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा संकलित स्तवन की पुस्तक 'मारा व्हालां प्रभु' नामक पुस्तक के विमोचन का लाभ विशाला अहमदाबाद निवासी श्रीमती गजीदेवी मिश्रीमलजी के पुत्र रतनलालजी जगदीशजी बोथरा परिवार ने लिया।

अष्टाह्निका प्रवचन व सुधारस का विमोचन

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा लिखित पर्युषण अष्टाह्निका प्रवचन ग्रन्थ एवं सुधारस नामक का विमोचन इन्दौर नगर में संवत्सरी के दिन किया गया।

अष्टाह्निका प्रवचन नामक ग्रन्थ के विमोचन का लाभ बिलाडा हैदराबाद निवासी श्री रतनचंदजी प्रकाशचंदजी चौपडा परिवार ने लिया तथा सुधारस नामक पुस्तक के विमोचन का लाभ इन्दौर निवासी श्री प्रकाशचंदजी हेमंतकुमारजी मालू परिवार ने लिया।

अष्टाह्निका प्रवचन में पर्युषण प्रारंभ के दो दिनों के प्रवचन का लेखन हुआ है। सुधारस में पूज्य आचार्यश्री द्वारा रचित स्तवनों, स्तुतियों व सज्झायों का संग्रह है।

मुंबई में मनाया गया वीरायतन सांचोर का वार्षिकोत्सव

मुंबई 30 सितंबर। वीरायतन संस्था ने 'जहाँ जिनालय वहाँ विद्यालय' की अभिनव योजना तैयार की है। वीरायतन की संस्थापिका आचार्य चंदनाजी ने तीर्थंकर महावीर विद्या मंदिर, वीरायतन सांचोर के मुम्बई में आयोजित प्रथम वार्षिक समारोह में अपने आशीर्वचन में कही।

इस समारोह के मुख्य अतिथि नाकोड़ा तीर्थ के अध्यक्ष संघवी रमेश मुथा ने वीरायतन के प्रकल्पों की सराहना करते हुए कहा कि नाकोड़ा तीर्थ क्षेत्र में भी शैक्षिक विकास के नए आयाम स्थापित किये जायेंगे। जीतो के पूर्व चैयरमेन व जिनदत्त कुशलसूरि ट्रस्ट के अध्यक्ष तेजराज गुलेच्छा, कुशलराज भंसाली, वीरायतन के सचिव टी. आर. डागा, केवलचंद बोहरा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

इससे पूर्व कार्यक्रम के संयोजक व वीरायतन के उपाध्यक्ष प्रकाश कानूगो ने स्व. मनोहर कानूगो द्वारा एक वर्ष पूर्व सांचोर में भूमि व भवन प्रदान कर स्थापित किये गए तीर्थंकर महावीर विद्या मंदिर, वीरायतन की विकास यात्रा व भावी योजनाओं पर प्रकाश डालते हुए सहयोग की अपील की, जिस पर कई दानदाताओ ने आगे आकर अपने योगदान की घोषणा की। ट्रस्ट के चैयरमेन कमलेश कानूगो ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन कन्हैयालाल खंडेलवाल ने किया तथा विनीत गेमावत ने समधुर भक्ति संगीत प्रस्तुत किया।

वीरायतन के 200 स्कूल प्रोजेक्ट के चेयरमैन अशोक कटारिया ने प्रोजेक्ट पर जानकारी दी। इस अवसर पर वीरायतन के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सुंदरजी भाई, सहसचिव आर. सी. संघवी, कोषाध्यक्ष प्रवीण भाई छेड़ा, जिनकुशलसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट शंखेश्वर के वंशराज भंसाली, भूपत कांटेड, पुखराज तातेड़, अखिल भारतीय भंसाली समाज के अध्यक्ष पुखराज भंसाली, कटारिया संघवी समाज के प्रकाश संघवी, वीनस ग्रुप के घेवरचंद संघवी, नरसिंहमल बोहरा, वर्ल्ड जैन कॉन्फ्रेंस के पंडित जितुभाई शाह, मांगीलाल श्रीश्रीश्रीमाल, नरपत बोथरा, सोहनराज जैन, मनोहर चंदन, राकेश कानूगो, कल्पेश कानूगो सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे। महावीर विद्या मंदिर सांचोर के करीब 35 बालकों व शिक्षिकाओं ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कार्यक्रम को सफल बनाने में धनपत कानुंगो, हेमंत कानुंगो, ओरा इवेंट के राकेश जैन, अश्विन शर्मा, राजकुमार गिरी आदि का सहयोग रहा। कार्यक्रम के प्रारंभ में संघमित्राश्रीजी ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया।

देराउर में मेला

जयपुर 25 नवंबर। देराउर दादावाडी में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरिजी म. की 739वां जन्मोत्सव 25 नवंबर 2018 को पूज्य गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. की आज्ञानुवर्तिनी पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में मनाया जाएगा। समस्त कार्यक्रम का लाभ श्री ऋषभकुमारजी चौधरी परिवार ने लिया है। पधारने का सभी को आमंत्रण है। —सुनील बैंगानी, मंत्री

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरि

जटाशंकर ने बाजार में जाकर कामकाज के लिये एक गधा खरीदा। शारीरिक दृष्टि से बहुत ही मजबूत, लम्बा चौड़ा गधा था। उसके गले में रस्सी बांधी, दूसरा सिरा अपने हाथ में लिया और घर की ओर रवाना हुआ।

दो ठग उसके पीछे लग गये। उन्होंने तय किया कि इस गधे को हथियाना है। बहुत समय हो गया- बोनी नहीं हुई। यही ठीक है। गधे को हथिया कर बाजार में बेच देंगे।

दोनों ने योजना बनाई। जटाशंकर अपनी मस्ती में गीत गाता हुआ चल रहा था। एक ठग ने धीरे से बिना आवाज किये गधे के गले की रस्सी को खोला और अपने गले में बांध दी।

वह स्वयं गधे की तरह जटाशंकर के पीछे चलने लगा। दूसरे ठग ने गधे को ले जाकर बाजार में बेच दिया।

जटाशंकर अपने घर पहुँचा। दरवाजे पर ही उसे पत्नी मिली। पत्नी ने दृश्य देखा तो अचरज में पड गई। गधे को खरीदने गये थे और यह क्या लाये! एक आदमी के गले में रस्सी क्यों बांधी है! क्या हुआ!

तभी जटाशंकर ने गधे को पुचकारते हुए आगे लाकर बांधने के लिये रस्सी खींची। आदमी को देखकर हैरान हो गया। अरे! तूं कौन है! और मेरा गधा कहाँ गया!

वह ठग बोला- हुजूर! मैं ही वो गधा हूँ जिसे आपने बाजार में खरीदा था। असल में मेरी आदतों से मां परेशान हो गई थी। मैं माँ की सेवा नहीं करता था... उसके सामने बोलता था... इस कारण क्रोध में आकर माँ ने मुझे शाप देकर गधा बना दिया।

पर आप धन्य हैं... महापुरुष हैं आप... जैसे भगवान राम के स्पर्श से पत्थर अहिल्या बन गया। उसी प्रकार आपका स्पर्श पाकर मैं पुनः अपने स्वरूप में आ गया।

जटाशंकर अपनी प्रशंसा सुनकर इतरा उठा। उसने कहा- चल जा! अपने घर जा! और माँ की सेवा करना... उन्हें कष्ट मत देना... नहीं तो वापस तुझे शापित होना पडेगा।

ठग मुस्कुराता हुआ अपने घर चला गया।

दूसरे दिन जटाशंकर बाजार में गया था। उसी गधे को देखा तो उसके कान में जाकर बोला- मेरी बात नहीं मानी! सेवा नहीं की! वापस गधा बन गया। उसने करुणा करके गधे का स्पर्श किया ताकि वह वापस आदमी बन जाय। लोग उसकी हरकत देखकर हँसने लगे। कहीं गधा आदमी होता है क्या!

तब जटाशंकर को समझ में आया कि मैं ठगा गया। गधे ने रेंकते हुए एक दुलत्ती लगाई। जटाशंकर ने झेंपते हुए अपने घर की राह पकड़ी।

इस जगत ठगों की कमी नहीं है। ठग हमें वो दिखा देता है, जो होता नहीं है। ठग हमसे हंसते-हंसते वैसा करा देता है, जो हमारे लिये ही नुकसानकारक हो!

मोह ऐसा ही ठगराज है। उसी के नशे में मैं वह सब करने लगता हूँ जो मेरे लिये अहितकारी होता है। संसार के ठग का पता तो कुछ देर बाद लग ही जाता है। पर मोह रूपी ठग का पता अंतिम क्षण तक नहीं लगता। यदि लग जाये तो जीवन बदल जाता है।

पंचांग में भूल सुधार

जहाज मंदिर द्वारा प्रकाशित छोटे पंचांग में आगामी वर्ष में महावीर निर्वाण कल्याणक की तिथि व गौतम रास के वांचन तिथि में त्रुटि हुई है।

महावीर निर्वाण कल्याणक 27.10.19 के स्थान पर 28.10.19 कार्तिक वदि अमावस्या सोमवार को समझे।

नूतन वर्ष प्रारंभ व गौतम रास का वांचन 28.10.19 के स्थान पर 29.10.19 कार्तिक शुक्ल 2 मंगलवार को समझे। त्रुटि के लिये खेद है।

कुशल वाटिका बाडमेर के प्रांगण में
अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद एवं
अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद के
संयुक्त तत्वावधान में
चतुर्थ वांचना शिविर का सस्नेह आमंत्रण

शिविर प्रारंभ
दि. 26 दिसम्बर 2018,
बुधवार

शिविर समापन
दि. 30 दिसम्बर 2018,
रविवार

आज्ञा एवं आशीर्वाद प्रदाता

पू. खरतरगच्छाधिपति गुरुदेव आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा

पावन निश्रा

स्वाध्याय रसिक पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी. म.,
पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी. म., पू. मुनि श्री विरक्ततप्रभसागरजी. म.,
पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी. म.

आप सभी को अवश्य पधारना है। साथ ही अपने 12 वर्ष से अधिक आयु के बच्चों को भी आने हेतु प्रेरित करना है।

अनुशासन एवं सभी कार्यक्रमों में उपस्थिति अनिवार्य रहेगी।

कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना अवश्य देवें जिससे आपके आवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके।

निवेदक

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद (केन्द्रीय समिति)
अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद

संपर्क सूत्र-
रमेश लुंकड़ 94232 86112, ललित डाकलिया 99508 82563, रमेश मालू 98442 51261

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

कार्तिक पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएं

झाबक ट्रेक्टर्स
संकेत झाबक
मो. 93023-14042

झाबक इम्पलीमेंटस
संजोग झाबक
मो. 95757-93000

अलाईड ट्रेडर्स
संदीप झाबक
मो. 82250-50888

ओटोमोबाईल एवं ट्रैक्टर पार्ट्स के होलसेल एवं रिटेल विक्रेता

झाबक बाड़ा, कमासी पारा, तात्यापारा चौक के पास
रायपुर (छ.ग.) 492001

विनीत

मोतीलाल, गौतमचन्द, सम्पत लाल, कमलेश कुमार
संदीप, संजोग, संकेत एवं समस्त झाबक परिवार

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. चू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, शिवगंज रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. चू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408